।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

समाचार-पत्र

ई-पेपर

प्रेम प्रकाश सन्देश

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मासिक समाचार पत्र

15 अप्रेल 2026 वर्ष 19 अंक 1

कुल पृष्ठ - 34 वार्षिक शुल्क : ₹ 200/- (भारतवर्ष में), ₹ 2000/- (विदेश में), एक प्रति ₹ 20/-

सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

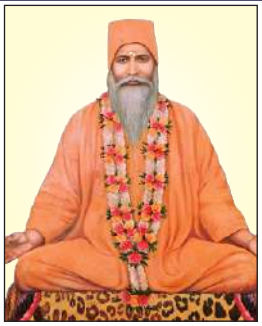

उपर्युक्त पदों का अर्थ समझाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि जब यह जीव भगवान से मिलता है, तब जहाँ-तहाँ भगवान को देखकर बहुत प्रसन्न होता है और भगवान भी प्रसन्न होता है । एक दूसरे को देख कर फिर दोनों मिल कर एक रूप हो जाते हैं। सन्त "रैणजी" कहते हैं कि हमें तो वह दयालू भगवान मिला है, जिसका ऐसा रिवाज ही नहीं है, जो एक बार मिल कर फिर जुदा कर दे। गुरु महाराज जी ने इस विषय पर प्रवचन देकर राम नाम की धुनि लगा कर रात को एक बजे सत्संग समाप्त किया ।

इस तरह नापुरन गाँव में रह कर गुरु महाराज जी नियमानुसार धर्म और कर्म का उपदेश करते रहे। फिर क्वार (आश्विन) मास की पाँचवीं तिथि को बागड़जी गाँव के भगत मोटणराम जी गुरु महाराज जी को लेने आये। छठी तिथि को प्रातः सवेरे गुरु महाराज जी मण्डली सहित गाते-बजाते नापुरन गाँव से बाहर निकल कर सब प्रेमियों को आशीर्वाद दे और सबसे विदा होकर पैदल ही बागड़जी गाँव को चल पड़े। गुरु महाराज जी चित्त के बड़े ही उदार थे। स्वयं को कष्टों में डाल कर भी दूसरों को सुख पहुँचाने की भरपूर चेष्टा किया करते थे। सदा अभेद वाणी द्वारा सत्य का उपदेश किया करते थे। छल, कपट, दम्भ और पाखण्ड आदि का खण्डन कर, संशय भ्रमों को दूर कर, सब जीवों को भय रहित कर सत्य की राह पर चलाया करते थे।

विशेषकर गुरु महाराज जी पैदल ही यात्रा किया करते थे। सो अब भी नापुरन गाँव से पैदल चल कर बागड़जी गाँव में पधारे। वहाँ गाँव के बाहर स्वागत के लिये खड़े भाई कलूराम व अन्य प्रेमियों ने गुरु महाराज जी का स्वागत-सत्कार कर पुष्पमालाओं से गुरु महाराज जी को सुशोभित कर दिया। फिर गुरु महाराज जी के पवित्र नाम का जयघोष कर गाते-बजाते सारे गाँव में से होते हुए, भाई हुरियाराम जी की बैठक पर जहाँ पर पहले से ही सुव्यवस्था कर दी कर दी गयी थी, वहाँ पर सजाए गये आसन पर गुरु महाराज जी आकर विराजमान हुए। फिर सब प्रेमी लोग प्रसाद रख व प्रणाम कर कुशल समाचार पूछ कर अपने घर गये। सायं नियमानुसार सैर करने के बाद सत्संग करने लगे। शुभकर्मों के विषय पर व्याख्या करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि इस जीव के द्वारा किये गये शुभकर्म ही इस लोक अथवा परलोक में उसकी सहायता करते हैं।

निम्नलिखित दृष्टांत के द्वारा समझाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि कोई एक सेठ व्यापार करने के लिए देश छोड़ कर विदेश को गया। वहाँ पर तीन साल रह कर चार धनी लोगों को अपने व्यापार में भागीदार बनाया। तीसरे

शेष पेज नं. 2 पर...

पेज नं. 1 से आगे...

साल के अन्त में अपने देश से उस सेठ को यह चिट्ठी आयी कि अब जल्दी से वापस चले आओ। चिट्ठी बांचकर विचार किया कि जाने से पहले जिन सेठों को साझेदार बनाया है, उन से विदा लेकर जायें तो अच्छा होगा। यह सोचकर, जिस सेठ के साथ रुपया हिस्सेदारी थी उसके पास जाकर चिट्ठी सुना कर कहने लगा कि सेठ जी। अब मैं स्वदेश जा रहा हूँ, आप से विदा लेने आया हूँ, आप मेरी कुछ सहायता कर सकते हो? यह सुनकर रुपया हिस्सा लेने वाला सेठ कहने लगा कि मैं तो आपकी जरा सी भी सहायता नहीं करूँगा। मेरा तो आपके साथ जरा सा भी प्रेम नहीं है, आपने ही तो मेरे साथ प्रीति रखी है। यह रूखा उत्तर सुनकर सेठजी बहुत दुःखी हुए।

निराश होकर फिर दूसरे सेठ के पास, जिसके साथ बारह आने हिंस्सेदारी रखी थी वहाँ गया, परन्तु वहाँ से भी कोई सन्तोषजनक उत्तर नहीं मिला, ये ही जवाब मिला कि आप की और तो कुछ भी सहायता कर नहीं सकता, परन्तु दरवाजे तक आपके साथ अवश्य चलूँगा। फिर तीसरे सेठ जिसके साथ आठ आना हिस्सेदारी थी उसने भी यह कह कर टाल दिया कि भाई! और तो मेरे द्वारा कुछ भी नहीं बन पायेगा। बाकी स्टेशन तक चलूँगा। यह सुन कर सेठ जी को कुछ सन्तोष हुआ। मन में कहने लगा कि दूसरों से तो फिर भी यह अच्छा निकला जो स्टेशन तक तो चलता है। फिर चौथे सेठ जिसके साथ चार आना हिस्सेदारी थी उससे विदा लेने गया। वहाँ पहुँच कर स्वदेश जाने की बात बता कर सेठ कहने लगा कि आप से जो कुछ भी बन पड़े वो सहायता करो। यह सुन कर सेठ जी बड़े प्यार से कहने लगे कि प्रिय सज्जन! आप चिन्ता न करें, मैं स्वयं आप की टिकट भी लूँगा व रास्ते के लिये आवश्यक सामान भी ले चलूँगा और आप को स्वदेश पहुँचा कर आऊँगा। यह सुन कर सेठ बड़ा खुश हुआ व दिल में कहने लगा कि यह सेठ तो सब से अच्छा निकला। अगर इस सेठ से रुपये का रुपया हिस्सेदारी रखता तो कितना अच्छा होता।

इस दृष्टांत का सिद्धान्त समझाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि यह जीव ही सेठ है जो अपने स्वदेश माने परलोक से विदेश माने मृत्युलोक में मनुष्य बन कर गुण, ज्ञानभक्ति रूपी धन कमाने के लिये आया है। यह जीव यहाँ मृत्युलोक में तीन वर्ष माने तीन अवस्था, बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था बिताता है। बाल्यावस्था को अज्ञानवश होकर खेलकूद में गंवा देता है। जब युवावस्था को यह जीव प्राप्त होता है तब चार सेठों यथा धन, स्त्री, परिवार व सन्तों के साथ प्रीति जोड़ता है। धन के साथ रुपये का रुपया, स्त्री के साथ बारह आना, परिवार के साथ आठ आना और सद्गुरु, सन्तों व शुभकर्मों के साथ चार आना प्रीति जोड़ता है। जब वृद्धावस्था आती है तब इस जीव को स्वदेश माने परलोक से चिट्ठी माने काल का बुलावा आता है। तब घबरा कर सहायता के लिये चारों ओर देखता है। विशेषकर जिन के साथ प्रीति रखी थी, उन की ओर देख कर विचार करता है कि इस कठिन समय में क्या ये मेरे साझेदार मेरी सहायता करेंगे?

यह सोच कर धन की ओर देख कर कहता है कि क्या आप साथ चलोगे ? यह सुन कर धन कहता है कि मैं तो एक कदम भी आपके साथ नहीं चलूँगा। इस पर बहुत दुःखी होकर कहता है कि हे धन ! मैंने बहुत से बड़े-बड़े कष्टों को सह कर और कई प्रकार के छल-कपट कर आपको इकट्ठा किया है, आपको संभाला है, फिर भी आज आप एक कदम भी साथ नहीं चलते। इस पर अकड़ कर धन कहने लगा कि अरे मूर्ख ! मैंने कब कहा था कि आप मुझ से इतनी प्रीति रखो। सम्भव है आपको मालूम नहीं। जो कोई भी मुझ से प्रीति रखता है तो उसको मैं नरक के दरवाजे दिखलाता हूँ। यह सुन कर सेठ जी के सांस ठण्डे पड़ गये।

फिर स्त्री जिस के साथ बारह आना प्रीति रखी थी उस की ओर प्रेम से देख कर कहता है कि अब मैं स्वदेश जा रहा हूं, क्या आप मेरी कुछ सहायता करोगी ? इस पर स्त्री कहती है, है स्वामी ! मैं और तो आपकी कुछ सहायता कर नहीं पाऊंगी, बाकी आप के साथ दरवाजे तक जरूर चलूंगी । फिर परिवार जिस के साथ आठ आना प्रीति रखी थी, उस से पूछता है कि क्या आप लोग इस अन्तकाल में मेरी सहायता करेंगे ? यह सुनकर परिवार के लोग कहते हैं कि हम लोग स्टेशन माने शमशान तक आपका साथ देंगे, आगे आपने अपने जीवनकाल में जो कुछ भी धर्म अथवा शुभकर्म किये होंगे वे ही आपके साथ चलेंगे ।

शेष अगले अंक में...

।। ॐ सत्नाम साक्षी ।।
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का आध्यात्मिक मुखपत्र

प्रेम प्रकाश सन्देश

15 अप्रेल 2026

वर्ष 19 | अंक 1

मंगल आशीष

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

संस्थापक
सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षक–मार्गदर्शक–प्रेरणास्त्रोत
सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिये	₹ 200	₹ 2000
दो वर्ष के लिये	₹ 400	₹ 4000

मनीआर्डर भेजने व पत्र व्यवहार के लिये पता :
व्यवस्थापक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ,
लश्कर, ग्वालियर-474001 (मध्यप्रदेश)
मोबा. 0751-4045144
सम्पर्क समय : प्रात 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)
e-mail : premprakashsandesh@gmail.com

Bank Facility

आईडीबीआई बैंक में आप कोर सुविधा/मनी ट्रांसफर के माध्यम से भी निम्न खाते में शुल्क जमा कराके फोन 0751-4045144 पर अथवा व्हाटस् एप नम्बर 8989701236 पर सूचना दे सकते हैं.

A/c 92610010000468
Net Bankig : IFSC: IBKL0000545
Editor Prem Prakash Sandesh, Gwalior

नई सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिये सदस्यता शुल्क आप मनीआर्डर/कोर बैंक माध्यम के अलावा सद्गुरु महाराज जी की यात्रा के समय बुक स्टॉल पर व देश भर के विभिन्न शहरों में हमारे प्रतिनिधियों के पास जमा कर सकते हैं. इसके अलावा परम पावन गुरु धाम श्री अमरापुर दरबार (डिंडु), जयपुर के श्री अमरापुर सत्साहित्य केन्द्र में प्रतिदिन एवं रविवार प्रातः 8 से 12 व प्रत्येक गुरुवार-शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक श्री कुमार चन्दनानी, श्री नारायणदास रामचंदानी, श्री निहालचंद तेजनानी व श्री अशोक कुमार पुरसानी के पास जमा किया जा सकता है.

कविता

सांई टेऊँराम बाबा की महिमा

सांई टेऊँराम की लीलाएँ अपरम्पार,
प्रभु समर्पित संत थे या स्वयं ही थे अवतार ?
जीवन था अमृत की धारा बूँद भी जिसने पाई,
धन्य हो गया मानस मानों मणि अमोलक पाई।
मोह पाश में फँसे जगत में ज्ञान की ज्योति जलाई,
समझाई सत्संग की महिमा मुक्ति की राह दिखाई।
अपनाओ प्रभु भक्ति न जिनका आदि कोई ना अंत,
वाणी से झरता अमृत तेजोमय ज्ञानी संत।
जहाँ धरे निज चरण बना तीरथ वह पावन धाम,
गूँजे सांई का जयकारा जय जय टेऊँराम।
थे युग पुरुष जगत में आए करने को उद्धार,
मोह भँवर में फँसे जनों का करने बेड़ा पार।
तिमिर हरण थे देखे प्राणी भटके दिशा विहीन,
इक प्रकाश का पुँज बने फिर हुए ब्रह्म में लीन।

अनुक्रमणिका

अनुक्रम	विषय	पृष्ठ
01.	सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी	1–2
02.	युगपुरुष-युगदृष्टा की आध्यात्मिक अनमोल कृति-श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ	4–6
03.	सद्ग्रन्थ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के बारे में जानकारी	7
04.	आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीमुख से प्रथम चैत्र मेले के प्रवचनांश	8–10
05.	सूचना-आतिशबाजी उपयोग न करें	10
06.	रमजान की गुरुभक्ति, सांई टेऊँराम बाबा ने बताये भक्ति के पांच साधन	11
07.	सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज जन्मोत्सव विशेष	12
08.	श्री अमरापुर स्थान जयपुर में 105वां चैत्र मेला सम्पन्न समाचार विवरण	13–25
09.	उज्जैन में नवनिर्मित श्री प्रेम प्रकाश आश्रम का उद्घाटन	26
10.	पुरुषोत्तम मास की महिमा	27
11.	दान दिए धन न घटे, मधुर विनोद (प्रेरक प्रसंग)	28
12.	सांई हरिदासराम जी महाराज 97वां जन्मोत्सव सूचना	29
13.	श्री अमरापुर स्थान जयपुर पर पुरुषोत्तम मास कार्यक्रम सूचना	30
14.	भजन श्री हरकेश वधवा	31
15.	सत्गुरु मेरी पकड़ो बांह इक बार प्रेरक प्रसंग	31
16.	अमरापुर गमन	32
17.	व्रत-पर्व-उत्सव	33
18.	पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डली का यात्रा कार्यक्रम	33
19.	ब्रह्मदर्शनी (सिंधीअ में समुझाणी)	34

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी ।।

युगपुरुष-युगदृष्टा की आध्यात्मिक अनमोल कृति

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

(आचार्यश्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित महाग्रन्थ)

प्रेम! प्रेम! ओहो, कितने कर्णप्रिय श्रुत मधुर शब्द हैं. इन दो अक्षरों पर संसार की समस्त वस्तुएँ भी वारी जायें तो भी कम है. इसे समझना बड़ा ही कठिन व दुर्लभ है और जिसने इन दो अक्षरों (प्रेम) को समझ लिया उसे साक्षात् भगवद् की प्राप्ति हो जाती है. हमें भी उस सच्चे विशुद्ध प्रेम की आवश्यकता है. प्रेम प्रभु का साक्षात् स्वरूप है. वन-वृक्ष, लता-पुष्प और कुंज-निकुंज सर्वत्र प्रेम ही प्रेम विद्यमान है. जिस प्रकार दुग्ध की रग-रग में घृत, पुष्प में सुगन्ध, चन्द्र में शीतलता, अग्नि में ताप की व्यापकता है उसी प्रकार संसार के समस्त कण-कण में परमात्मा की व्यापकता और प्रेम रस रम रहा है. भावुकता, सहृदयता, और अनुभूति द्वारा इस प्रेम की उपलब्धि होती है.

प्रेम एक बड़ी ही मीठी, मादक और मधुर मदिरा है जिसने इसका रसास्वादन किया वह निहाल हो गया, धन्य-धन्य हो गया. वह मस्त हो गया. उस मतवाले की भला कौन बराबरी कर सकता है. संसार के सारे शांहशाह उसके गुलाम हो जाते हैं. त्रिलोकी का राज्य उसके लिये तृण के समान प्रतीत होता है।

अनुभव से कहता हूँ, मैंने उसे कर लिया है बस में ।
जो चाहे सो पिये प्रेम से, अमृत भरा है इस रस में ।।

सर्वत्र आनन्द ही आनन्द! अपनी मस्ती में मस्त! उसी प्रेम की मस्ती का स्वयं पाठ पढ़के श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की स्थापना की हमारे युगपुरुष-युगदृष्टा आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने. **"भगतेश्च मार्गस्य निदर्शकाय-प्रेम प्रकाश मण्डलोद्भवाय"**. उसी प्रेम तत्त्व को अच्छी तरह समझा और उसका गहन चिन्तन-मनन किया. वैसे प्रेम का कोई अलग अस्तित्व नहीं है. प्रेम तो प्रभु की परछाई है. परछाई यथार्थ वस्तु की तो होती है अर्थात् प्रेम और प्रभु दो नहीं हो सकते. प्रेम की समता किससे की जाय? जब उसकी बराबरी की कोई दूसरी वस्तु हो तभी तो तुलना की जा सकती है. वह अद्वितीय, अनिर्वचनीय और अनुपमेय है. उसके समान संसार में आज तक कोई वस्तु न हुई है न है और न आगे होगी. वह अजर अमर और अनादि है तो ऐसी वस्तु को ही अपने जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए जिसका न कभी अन्त हो और जो सदैव अजर अमर रहे. सत्पुरुष इन्हीं गहराइयों में जाकर उस प्रेम तत्त्व की खोज करते हैं. सफलता प्राप्त होने पर प्रेम और परमात्मा की भिन्नता ही समाप्त कर लेते हैं.

'प्रेम हरी कौ रूप है, त्यौं हरि प्रेम स्वरूप।'

तभी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी में लिखा है-

इन्द्रराज वैकुण्ठ सुख, नहीं मांगू धन धाम।
कह टेऊँ मुझ दीजिए, हे हरि अपना नाम।।

ऐसे प्रेम रस के रसिक प्रेमा स्वरूप सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अनुभवी वाणी द्वारा रचित ग्रन्थावली का नाम "श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ" नाम ही के अनुरूप इस ग्रन्थ की यही एक विशेषता है कि इसमें सभी धर्म ग्रन्थ, सत्शास्त्रों का सार तत्त्व भरा हुआ है. साथ ही यह प्रेमारस, भक्ति, ज्ञान, कर्म, गुरु महिमा, प्रभु गुणगान, मुक्ति का स्वरूप, ब्रह्मज्ञान, राम-नाम महिमा, आदि अमृतरस से परिपूर्ण है.

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने जिस आध्यात्मिक अमृत का रसास्वादन किया, उस अमृत का

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

बिना गुरू की भक्ति के आत्म-ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है।
ईश्वर से भी गुरु का महत्त्व बड़ा है ।

दूसरों को आस्वादन कराने के लिये उन्होंने 'श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ' की रचना की. स्वामी जी का व्यक्तित्व एक सिद्ध योगी के साथ-साथ दर्शनिक, समाज सुधारक, संगीतज्ञ, भक्त कवि, संत एवं अध्यात्म युग दृष्टा के रूप में भी जगत के सामने आया. वे स्वतंत्रता तथा सात्विक सरल व सादा जीवन जीने के प्रबल समर्थक थे. उनकी साधना, स्वानुभूति, सद्विचार तथा सदाचार से सम्बन्ध रखती थी. स्वामी जी ने अपने तप बल व भक्ति साधना से न केवल सिन्धु प्रदेश को अपितु सारे संसार को अपनी ज्ञान ज्योति से आलोकित किया. उनकी वाणी में माधुर्य था और कण्ठ में साक्षात् विद्या प्रदायनी माँ सरस्वती देवी थी. स्वामी जी ने अपनी वाणी में किसी भी मत, मजहब, भेष, पंथ, धर्म, जाति की निन्दा या खण्डन नहीं किया है. पूरे जीवन भर लोकोत्तर हेतु देशारटन करते-करते हृदय से जो अनुभव वाणी प्रेम-भक्ति-ज्ञान की मंदाकनी प्रवाहित होती रही उन्हीं ज्ञान की अमृतवाणी का अमूल्य खजाना है- 'श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ'.

आचार्य श्री गुरुवर स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत कवियों में विशिष्ट स्थान रखते हैं. उन्होंने अपने जीवन काल में तप-साधना के साथ-साथ श्रीमद्भगवगीता, वेद, उपनिषद्, भागवत, रामायण, योग वशिष्ठ, पारस भाग आदि अनेक ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया.

उन्होंने अपने साधना काल में समय-समय पर अनेक संत, महापुरुष, तपस्वियों, योगियों व विद्वज्जनों का सम्पर्क भी किया. जिनसे सदैव आध्यात्मिक ज्ञानचर्चा करते रहे. ज्ञान-विज्ञान का आदान-प्रदान करते अन्तःकरण में ईश्वर के प्रति अत्यंत प्रेम अनुराग उत्पन्न हुआ. उस प्रेमाभक्ति का संचार भक्त कबीर, मीरा, रसखान, सूरदास की भाँति उनके श्रीमुख से कविता रूपी पद्य, दोहे, छन्द, भजन रूपी ज्ञान गंगा के रूप में प्रवाहित हुआ. जिससे न सिर्फ तत्कालीन संतप्त लोगों को शीतलता प्रदान की किन्तु युग-युगान्तर उनकी पवित्र अमृतवाणी हमें रसास्वादन कराती रहेगी.

युगदृष्टा प्रेरणास्त्रोत सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अमूल्य कृति है- "श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ". जिसके पठन व श्रवण करने से आध्यात्मिक परम आनन्द की प्राप्ति होती है. ग्रन्थ में बहुत सी वाणी हिन्दी और सिन्धी में संग्रहित है. आध्यात्मिक उन्नति के लिये ग्रन्थ की वाणी मरुस्थल में अमृत घट के समान है. लोकोद्धार दृष्टि से दिशा-निर्देश में भी समय-समय हमारा मार्गदर्शन करती है. अनेक संत कवि महापुरुषों के समान ही ग्रन्थ में राग-रागनियों में काव्य रचनाएँ की गई हैं. जैसे राग रामकली, राग आशा, राग पहाड़ी, राग पीला, राग धनाश्री, राग तिलंग, राग माँझ, राग हुसेनी, राग कल्याण इत्यादि राग आलापों का प्रयोग किया गया है. इससे प्रमाणित होता है कि महाराज श्री को भारतीय संगीत विद्या का भी अच्छा ज्ञान था. कहते हैं कि जब वे सत्संग में भजन गाते थे तो सभी श्रोतागण मंत्रमुग्ध हो जाते थे. एक समय तो स्वामी जी ने एक ही भजन को सोलह राग-रागनियों में गाकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया. हिन्दी संत कवियों की सदृश ही स्वामी जी ने भी अपनी वाणी में सवैया, दोहे, भजन, पद्य, छन्द, सलोक, कवित्त, कुण्डलियाँ, धनाश्री छन्द, कोटड़ा छन्द, बारह मास छन्द, सप्त दिवस छन्द आदि छन्दों में काव्यगत रचना की है. इन्हीं काव्यगत रचनाओं में गुरुभक्ति, ईश्वर उपासना, आत्म ज्ञान, वेदांत, संतों का संग, ब्रह्मज्ञान, कर्म बन्धन, ईश्वर प्रेमाभक्ति, सेवा भक्ति, गुरु महिमा, माया का स्वरूप, अभयदान, प्रभु की व्यापकता आदि विषयों पर सरल व सुबोध वाणी का संचार किया है. यह कहना भी अतिश्योक्ति नहीं होगी कि स्वामी जी द्वारा रचित **''श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ''** विभिन्न संत परम्परा के रचे गये गुरु ग्रन्थ साहिब, कबीरदास का बीजक ग्रन्थ आदि समतुल्य है. लगभग आठ सौ पृष्ठीय "श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ" आध्यात्मिक क्षेत्र में एक विशिष्ठ स्थान रखता है. ग्रन्थ में सर्व प्रथम मंगलाचरण- 'सत् चित ब्रह्म इक-निर्गुण निर आकार, कह टेऊँ सो होत है, सर्गुण रूप साकार।' उस परमात्म स्वरूप को दर्शाया गया है. 'तांको मैं वन्दन करूं-जान सर्व का रूप, कह टेऊँ सेवत जिसे, सुर नर मुनि जन भूप।।' सभी में परमात्मा की व्यापकता जानकर वन्दना की जा रही है. जिसकी सभी देवी-देवता, किन्नर, गंधर्व, देव, दानव, ऋषि-मुनि आदि पूजा-अर्चना करते हैं. इसी के साथ ग्रन्थ के प्रारम्भिक भजन में भी स्वयं को गुरु का दास मानकर इस भवसागर से पार उतारने की प्रार्थना की गई है.

गुरु दयाल प्रतिपाल, प्रभू पार तारो,
प्रभू पार तारो, हरी दास मैं तुम्हारो।

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

आज कल के लोगों को सिनेमा, सिगरेट, पान, सुपारी और चाय के अलावा कहीं भी सुख देखने में नहीं आता है।

युग प्रणेता परम पुरुष सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने इसी प्रकार पूरे ग्रन्थ साहिब में अलग-अलग आध्यात्मिक विषयों पर हमारा ध्यान केन्द्रित किया है.

अनेक संत-कवियों के समान ही सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने भी गुरु महिमा का व्याख्यान इस प्रकार किया है-

नमस्कार गुरु को करूँ, जो है ब्रह्म स्वरूप।
कह टेऊँ जिस सेव से, पाया ज्ञान अनूप।।
सद्गुरु बिन निज ज्ञान न होवे, कह टेऊँ सत मान।
ज्ञान बिना नहिं मुक्ति होवे, कहते वेद पुरान।।

गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती चाहे वह सांसारिक ज्ञान हो या आध्यात्मिक ज्ञान हो सभी भक्त कवियों ने गुरु की महत्ता पर बल दिया है. महाराज श्री ने एक जगह उपमा अलंकार व रूपक अलंकारों द्वारा गुरु महिमा को इस प्रकार गाया है कि गुरु वह ज्ञान रूपी रत्नों से परिपूर्ण है जो सत्गुरु की सेवा करता है उसे आत्मज्ञान रूपी अमूल्य रत्न प्राप्त होता है.

गुरु चरणामृत गंगाजल, वैकुण्ठ गुरु स्थान।
सत्गुरु विष्णु स्वरूप है, कहते वेद वख्यान।।

सद्गुरु सागर सम शीतल एवं ज्ञान रूपी रत्नों से परिपूर्ण है जो सत्गुरु की सेवा करता है उसे आत्मज्ञान रूपी अमूल्य रत्न प्राप्त होता है. गुरु साक्षात् भगवान का स्वरूप है. उनका पवित्र स्थान स्वर्ग के समान है और उनके चरणों का स्पर्श जल गंगाजल के समान है-

मन में गुरु के प्रति अगाध श्रद्धा भाव रखकर ग्रन्थ में गुरु महिमा को भलीभाँति प्रमाणित किया है. सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज न केवल महान संत कवि थे साथ ही दार्शनिक भी थे. उन्होंने ग्रन्थ में दार्शनिक विचारों का भी उल्लेख किया है. ब्रह्म,जीव,जगत,माया,मुक्ति सम्बन्धी विचारों को भी बड़े ही अनुभव के साथ व्यक्त किया है.

ब्रह्म अखण्ड अद्वैत अनामय, सत् चित आनन्द राशि है।
कहे टेऊँ सो प्रत्यक्ष जानो, साक्षी स्वयं प्रकाशी है।।

ब्रह्म सर्वव्यापी है सर्वत्र उसकी सत्ता विद्यमान है एवं सर्वत्र उसी का प्रकाश है. जीव अज्ञान के कारण स्वयं को देह मान बैठा है. जीव तथा ब्रह्म दोनों में पूर्ण अभेद है. दोनों में शुद्ध चेतन्य को लेकर एकता मानी जाती है. जगत को स्वप्न सम मिथ्या एवं झूठा माना जाता है. 'जो कुछ दीखत सोई स्वपना, स्वपना सब संसारा है' स्वप्न में जितने भी पदार्थ दृश्यमान हैं वे असत हैं, उनका कोई अस्तित्व ही नहीं. ब्रह्मज्ञान प्राप्ति के पश्चात् जगत झूठा प्रतीत होता है. माया के विभिन्न रूप हैं 'मरकर अग्नि बादल छाया स्वपन पदार्थ के सम माया' माया भी ब्रह्म की उत्पत्ति है किन्तु मिथ्या है. गुरु के ज्ञान द्वारा जब जीव को यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है तब वह जन्म-मरण के चक्कर से छूटकर मुक्त हो जाता है.

ऐसे ही राम नाम की महिमा, सत्संग महिमा, प्रेम की पराकाष्ठा, अन्तः साधना, सेवा की महत्ता, संत महिमा, सच्चा सन्यासी, परोपकर, मौन की महिमा, पुरुषार्थ, माँस भक्षण का त्याग करना, शाकाहार से लाभ, उपवास का महत्त्व, विचारों की शुद्धता, सुधारवादी दृष्टिकोण, शिक्षाएँ, कर्म प्रधानता, भगवद् चर्चा, भागवत, गीता, रामायण, वेद-वेदान्त, आदि सभी सत् शास्त्रों को संजो कर सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने "श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ" रूपी अमूल्य खजाने का भण्डार हम सबको प्रदान किया. जो प्रेम रस से परिपूर्ण है. जिस प्रकार गोपिकाओं को भगवान का प्रेम पाने का अनूठा बाँसुरी (मुरली) रूपी मंत्र मिल गया था उसी प्रकार हम सभी जिज्ञासु गुरुमुखों को इस प्रेमरस पान का अनूठा अनुपम खजाना प्राप्त हुआ है. जिसका हम नित्य प्रति पाठ करके जन्म-मरण के चक्कर से छूटकर परम पद को प्राप्त कर सकते हैं.

प्रेम प्रकाशी प्रेमियों- रहो गुरु के पास।
कह टेऊँ नित ही पढ़ो- ग्रन्थ प्रेम प्रकाश।।

संत कबीर, मीरा, सूरदास, रसखान, गुरुनानक, दादू दयाल, रैदास, आदि संतों के सदृश ही सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित अमर ग्रन्थ वाणी "श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ" सदैव अज़र, अमर होकर समय-समय हम सब जीवों का मार्गदर्शन करता रहेगा.

ऐसे परम पुरुष, युगदृष्टा **''श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ''** के रचयिता आचार्य सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज को हमारा शत्-शत् नमन व कोटि-कोटि वन्दन!

स्वामी मोहनलाल जी (मोनूराम) प्रेम प्रकाशी
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी — **हम सांसारिक सहारे छोड़कर भगवान की शरण लें तो आपको चारों पदार्थ धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति होगी।**

चैत्र मेला अवसर पर जानिये

सद्ग्रन्थ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के बारे में

卐 श्री प्रकाश ग्रन्थ का मूल आधार-
मंगलमूर्ति आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अनुभवी सत्य वाणी.

卐 श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का प्रकाशन संभव हुआ-
पूज्य गुरुवर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज, स्वामी बसन्तराम जी महाराज, संत भजनदास जी महाराज की अहेतुकी कृपा से.

卐 ग्रन्थ रचना का प्रथम प्रकाशन-
लगभग पचास वर्ष पूर्व, सन् 1961-62 !

卐 ग्रन्थ में कितनी भाषा बोलियों का प्रयोग हुआ है-
हिन्दी एवं सिन्धी (देवनागरी) भाषा बोली

卐 ग्रन्थ में कुल पृष्ठ संख्या- **795**

卐 ग्रन्थ में कुल भजन संख्या-
921 (हिन्दी), 670 (सिन्धी) कुल 1591

卐 ग्रन्थ में कुल कितने रागों में भजन हैं-
25 रागों में भजन संग्रहित हैं

卐 कुल पृष्ठ संख्या है 795, जिसमें हिन्दी भाषा में कुल पृष्ठ संख्या है 1 से 524 तक व अंत में 791 से 795 तक इस प्रकार कुल पृष्ठ 530 पृष्ठों पर आचार्य श्री की अनुभव वाणी संकलित है.

卐 इसी प्रकार सिन्धी भाषा में पृष्ठ संख्या 525 से 790 तक कुल पृष्ठ 265 पर सिंधी देवनागरी लिपि में आचार्य श्री की अलोकिक दिव्य वाणी सग्रंहित है.

卐 श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ को घर में रखने के लिए किसी प्रकार का कोई नियम-बंधन नहीं है. इसे घर में पूजा स्थान अथवा अन्य किसी पवित्र स्थान पर रखा जा सकता है. इसे कभी भी किसी भी समय खोल कर पढ़ने अथवा वचन लेने के उपरांत पुनः बंद करके वापस यथास्थान रखा जा सकता है.

卐 श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का घर में नियमित पाठ करने के लिए किसी प्रकार का प्रसाद भोग लगाने की परम्परा नहीं है.

卐 श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का अखण्ड पाठ एक दिन अर्थात् 24 घंटे में पूर्ण होता है.

卐 श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पाठ तीन, पाँच, सात दिवस अथवा मनोरथ पूर्ण होने तक सहज पाठ रखा जा सकता है. इसके आरम्भ व भोग के समय निर्धारित नियमों का पालन अवश्य करना चाहिये.

卐 सद्ग्रन्थ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का पठन/श्रवण (पढ़ते-सुनते समय) करते हुए कभी भी गुरुदेव की वाणी को तोड़ना/जोड़ना नहीं चाहिये.

卐 सहज पाठ साहब रखने से पूर्व पूजा-अर्चना की जाती है, फिर आचार्य जी की आरती करके पुनः पाठ आरम्भ किया जाता है. पाठ की समाप्ति शान्ति के दोहों के साथ सम्पन्न होती है, उसके बाद आरती व पल्लव आदि का कार्य सम्पन्न होकर उत्सव की समाप्ति की जाती है. इस प्रकार से श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठ साहिब रखने की विधि सम्पन्न होती है.

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ को अवश्य पढ़ना चाहिए

हर एक जिज्ञासु-गुरमुख को सद्ग्रन्थ श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ को आरम्भ से अंत तक एक बार अवश्य पारायण करना चाहिए (पढ़ना चाहिए).

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

आत्म-ज्ञान, ब्रह्म-ज्ञान, ईश्वर-दर्शन कोई साधारण बात नहीं, इनका बड़ा महत्व है, और बड़ा ही रहस्य युक्त है। इस रहस्य को जानने के लिये शास्त्रों का गहन अध्ययन करना पड़ेगा। 'श्री रामायण', 'श्री महाभारत' यह कोई साधारण ग्रन्थ नहीं-ऋषिकृत ग्रन्थ हैं। पढ़ना हमें कब पड़ेगा ? जब हमें जाना हो आगे।

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीमुख से प्रथम चैत्र मेले के प्रवचनांश

चौपाई : **अब मोहि भा भरोस हनुमन्ता।**
बिन, हरि कृपा मिलहिं नहिं सन्ता।।

दोहा : **सुत दारा और लक्ष्मी, पापी को भी होय।**
संत समागम हरि कथा, तुलसी दुर्लभ दोय।।

सारांश यह है कि भगवान की कृपा के बिना सन्त नहीं मिलते. स्त्री, धन, पुत्र, सुन्दर पदार्थ, मोटरें आदि तो पापियों के भी होती हैं. दूसरे जितने भी अन्य पदार्थ इस संसार में उपलब्ध हैं, वे इस जीव को सुविधापूर्वक मिल सकते हैं परन्तु सन्तों का समागम और भगवत कथा दोनों का मिलना अत्यन्त दुर्लभ है.

छन्द : **तात मिलै, पुनि मात मिलै,**
सुत भ्रात मिलै युवती सुखदाई।
राज मिलै गज बाजि मिलै,
सब साज मिलै मन-वांछित पाई।।
लोक मिलै सुरलोक मिलै,
बिधि लोक मिलै पुनि वैकुण्ठहि जाई।
और मिलै सब ही सुख सुन्दर,
सन्त समागम दुर्लभ भाई।।

अर्थात् माता, पिता, पुत्र, भाई, मामा, काका, सभी मित्र, राजसत्ता, हाथी घोड़े, पालकी, इस लोक के सुख, परलोक के सुख, ब्रह्मलोक के सुख, वैकुण्ठ के सुख और अन्य सभी सुख इस जीव को सहज भाव से मिल सकते हैं परन्तु सुन्दरदास जी महाराज कहते हैं कि सन्तों के समागम का सुख बड़ा ही दुर्लभ है. सन्तों के समागम से कितने ही जिज्ञासुओं और मुमुक्षुओं का उद्धार होता है. यह जो मेला रखा गया है वह विशेष रूप से जिज्ञासुओं और मुमुक्षुओं के लिए है ताकि सभी सत्संगी प्रेमी आकर सन्तों से आध्यात्मिक परिचर्चा कर अपनी आत्मा का साक्षात्कार करें.

श्लोक : **जेड़ा जिति मिड़नि, तेड़ो नशो नांहिं को।**
ओत्यो पोत्यो पाण में, पुरि कयो पियनि।
रची लाल थियनि, हिकड़ा संग बियनि जे।।

अर्थात् जहाँ पर सन्त महात्मा, तत्व-वेत्ता, ब्रह्मज्ञानी आकर आपस में मिलते हैं, वहाँ बड़ा ही उल्लास छाया रहता है. सभी सन्त आपस में मिलकर प्रश्नोत्तर कर, ऋषियों मुनियों की वेदान्त वाणी को छान कर, उसमें से आत्मज्ञान का अमृत निकालकर एक दूसरे को पिलाते हैं और वे स्वयं भी मस्ती में मस्त हो जाते हैं. उनका संग करने से कितने ही जिज्ञासुओं का कल्याण हो जाता है. सत्गुरु महाराज जी ने इस विषय पर निम्न भजन गाया-

।। राग भैरवी भजन ।।

टेक : साध संगत की तीन लोक में, जानो बड़ी बड़ाई।
श्रद्धा से जिन सत्संग किया, पूरन पदवी पाई।।

1. बाल्मीक मार्ग का डाकू, राह मुसाफिर मारे।
इक दिन सप्तर्षी भी चलकर, तांके निकट सिधारे।।
किसी लिए तुम पाप करत हो, संतनि वचन उचारे।
इसी पाप में मात पिता पुनि, साथी पुत्र लुगाई।।
2. पूछ कुटुम्ब से जल्दी आओ, अब तो ना हम लुटना।
बाल्मीक तब हँसकर बोला, तुम तो चाहत छुटना।।
बाँध वृक्ष से हमको जाओ, पीछे आकर लुटना।
आप बँधा कर, करत भला तिन, सन्तन पर बलि जाई।।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश अपने गुरू पर हजारों बार बलिहार जाऊँ जिसने मुझे पशु से मनुष्य, मनुष्य से देवता और देवता से भगवान बना दिया।

3. सप्त ऋषि को बांध वृक्ष से, बाल्मीक घर चलिया।
इसी पाप में मुझसे शामिल, हो या ना तुम भलिया।।
किस विधि भी तुम हमको पालो, पाप संग ना झलिया।
ऐसे सुन घर बार त्यागे, आय पड़ा शरणाई।।

4. कहे 'टेऊँ' भए संत दयालू, अपनी शरणी लाया।
'मरा' 'मरा' दे मन्त्र उसको, एक जगह बिठलाया।।
'राम' 'राम' रट तीन काल का, ज्ञान उसी ने पाया।
सन्त समागम एक घड़ी भी, वृथा कबहुँ न जाई।।

यह भजन सुनाकर सत्नाम साक्षी की धुनि लगाकर सत्संग समाप्त किया.

श्रेष्ठ जनों का संग

दोहा : **होत सु संगति सहज सुख, दूख कुसंगति जान।।**
गन्धी और लुहार की, देखो बैठ दुकान।।

अच्छे लोगों के संग से इस जीव को सहज में ही सुख की प्राप्ति होती है. और बुरे विचार वाले लोगों के संग से इस जीव को दुःख के सिवा और कुछ भी नहीं मिलता. गंधी (इत्र बेचने वाला) की दुकान पर बिना कुछ खरीद किये वैसे ही जाकर बैठेंगे तो भी इत्र की सुगन्ध तो अवश्य ही आयेगी, चाहे वह इत्र शीशियों में बन्द और अलमारियों में क्यों न पड़ा हो. लुहार की दुकान पर बैठने से बिना चाहे ही आग की गर्मी, धुआँ और चिनगारियाँ तो ज़रूर ही लगेंगी. विषय को और भी समझाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि-

दोहा : **नीच नरन के संग कर, भोगे दूख अपार।**
सीधा जावे नरक में, या तो यम के द्वार।।

इस जीव का कुकर्मियों, पापियों और मूर्खों के संसर्ग से पतन हो जाता है. वह मनुष्य निश्चय ही नरक में जा गिरेगा, अथवा यमलोक की यातनाएँ भोगेगा.

दोहा : **श्रेष्ठ जनों का संग कर, कह टेऊँ कर प्यार।**
पावेंगे पद परम को, ना तो स्वर्ग द्वार।।

और आत्मज्ञानी, परम विवेकी श्रेष्ठ पुरुषों के संसर्ग से जन्म-मरण के महान चक्कर से छूट कर अविनाशी परम पद को पाकर मुक्त हो जाओगे. परन्तु कुछ कमी रह भी गयी तो भी स्वर्ग के सुखों को तो अवश्य ही प्राप्त कर लोगे. सुसंग करने से इस मनुष्य का जन्म सार्थक हो जाता है और भगवान को प्राप्त करने की योग्यता भी उसमें आ जाती है. भगवान ने यह नर तन विशेषकर इसलिये ही दिया है ताकि नाना प्रकार की योनियों में भटका हुआ यह जीव फिर से आकर मुझ से मिले. आगे और गुरु महाराज जी कहने लगे कि-

दोहा : **अब का बिछुड़ा ना मिले, करे यतन बहु कोय।**
कह टेऊँ मन समझ ले, जो होया सो होय।।

जन्म-जन्मान्तरों से परमात्मा से बिछड़ा हुआ यह जीव यदि इस जन्म में परमात्मा से न मिल सका तो फिर अनेक उपाय करने पर भी यह जीव भगवान से मिल न पायेगा. गुरु महाराज जी स्वयं कहते हैं कि हे मन! ज़रा विचार कर देख, यह मनुष्य शरीर ही परमात्मा को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है. इस जन्म के बिछड़े हुए को युगों-युगों तक का बिछड़ा हुआ समझो और इस जन्म के मिले हुए को युगों-युगों का मिला हुआ समझो.

दोहा : **अब का मिला न बीछड़े, रहे जुगांजुग मेल।**
कह टेऊँ मन समझ के, चलो मिलन की गेल।।

उपर्युक्त दोहे की व्याख्या करते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि हे जीव! विचार कर भगवान से मिलने का मार्ग लेकर जाकर भगवान से मिल. मार्ग के सिवा तो प्रभु को पाया ही नहीं जा सकता. वैसे तो भगवान को प्राप्त करने के अनेकानेक मार्ग बताये गये हैं. परन्तु कुछ मार्ग संकरे हैं, तो कुछ टेढ़े हैं, तो कुछ छोटे हैं या तो बहुत लम्बे चक्कर वाले हैं पर एक बड़ा चौड़ा व सीधा रास्ता भी है, जिसके द्वारा यह जीव जल्दी ही अपने लक्ष्य को पहुँच सकता है.

मतलब समझाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि जप, तप, व्रत-नियम, पाठ-पूजा, सन्ध्या, गायत्री आदि और भी अनेक साधन हैं, वे सब छोटे व संकुचित मार्ग बताये गये हैं. जिनमें से यह जीव बहुत धीरे-धीरे चलता हुआ जाकर भगवान से मिलता है, यह पहला मार्ग है. दूसरा मार्ग है तीर्थों का स्नान, दान, योग, यज्ञ आदि. ये जितने भी

साधन हैं वे टेढ़े बताये गये हैं, जिनमें से यह जीव चल कर स्वर्ग आदि लोकों को घूमता-फिरता अनेक जन्मों के पश्चात् जाकर भगवान से मिलता है. तीसरा मार्ग तत्त्ववेत्ता सन्तों महात्माओं का संग है, यही एक बड़ा व सीधा रास्ता है, सुसंग का जो रास्ता है, वह सर्वोत्तम रास्ता है. इस मार्ग मे कोई भी भय गतिरोध नहीं करता. इस मार्ग पर चलने वाला जल्दी ही भगवान में जाकर मिलता है. फिर यह जीव चौरासी के चक्कर मे नहीं आता. इसलिये सत्पुरुषों का संग करके भगवान से मिलना चाहिये. एक बार मिल जाने पर यह जीव स्वयं, सो जुदा होने की इच्छा न करे, बाकी भगवान इसको कभी भी जुदा नहीं करेगा.

छन्द : **मिला प्यारा लथी दिलगीरी,**
मन विचि भयी खुशहाली।
जिति वलि देखां तिसि वलि डिसन्दा,
उस बाझों जाय न खाली।
आपे खावन्द आपे बरदा,
आपे जग दा वाली।
सन्त रैण वो मिलिया असां नूं,
जहिंदी बिछुड़ण दी नहिं चाली।।

उपर्युक्त पदों का अर्थ समझाते हुए गुरु महाराज जी कहने लगे कि जब यह जीव भगवान से मिलता है, तब जहाँ-तहाँ भगवान को देखकर बहुत प्रसन्न होता है और भगवान भी प्रसन्न होता है. एक दूसरे को देख कर फिर दोनों मिल कर एक रूप हो जाते हैं. सन्त 'रैणजी' कहते हैं कि हमें तो वह दयालू भगवान मिला है, जिसका ऐसा रिवाज ही नहीं है, जो एक बार मिल कर फिर जुदा कर दे. गुरु महाराज जी ने इस विषय पर प्रवचन देकर राम-नाम की धुनि लगाकर रात को एक बजे सत्संग समाप्त किया.

अति आवश्यक निर्देश

आतिशबाजी उपयोग न करें

प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट द्वारा निर्णय लिया गया है कि वर्तमान समय में प्राय: परम श्रद्धेय गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मण्डल के आगमन पर अगवानी करते समय प्रेमियों द्वारा अपनी सद्भावना एवं प्रसन्नता व्यक्त करने के लिये आतिशबाजी का उपयोग किया जा रहा है । जिससे न केवल पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है अपितु सम्पूर्ण प्राणी मात्र के लिये कष्टकारी है एवं साथ-साथ पूज्य महाराज श्री एवं पूज्य सन्तों के साथ सम्मिलित होने वाले प्रेमियों के स्वास्थ्य पर भी विपरीत/प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है , जिससे हम अनायास ही पाप के भागी बनते हैं ।

अत: प्रेम प्रकाश आश्रमों के माननीय प्रबन्धकों एवं प्रेमियों से विनम्र विनती है कि अपने-अपने शहर एवं प्रेमियों के व्यक्तिगत निवास स्थल पर आज से ही पूज्य सन्त मण्डल के आगमन पर स्वागत-सम्मान में किसी भी प्रकार की आतिशबाजी का उपयोग ना करें और ना ही किसी को करने दें।कृपया उक्त निर्देशों का पूर्ण रूप से पालन करने की कृपा करें ।

प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट
अमरापुर स्थान, जयपुर

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी मन में किसी वस्तु की चाह रखना ही दरिद्रता है।

रमजान की गुरु-भक्ति

एक दिन गुरु महाराज जी स्नान के पश्चात् ज्यों ही, ध्यान में बैठ रहे थे उसी समय रमजान ने आकर चरणार्विन्द में प्रणाम किया और आँखों में अश्रुधार बहाते हुए श्री गुरुदेव के श्रीचरणों में बैठ गया. श्री सद्गुरु महाराज जी ने कहा- हे प्यारे! परमात्मा की कृपा से सुख शान्ति तो है? रमजान कहने लगा- भगवन्! आपके चले जाने के पश्चात् दो-तीन दिन के बाद मेरा भाई अन्य सम्बन्धियों को बुलाकर लाया और मुझे मारपीट कर बाँधकर घर पर ले आया. वहाँ पर सब मौलवियों ने कहा- आपको शर्म आनी चाहिये कि अपने मुर्शिदों को छोड़ कर एक हिन्दू के शिष्य बने हो. अब हमारे सामने कलमा पढ़कर प्रतिज्ञा करो कि मैंने हिन्दू मुर्शिद (गुरु) छोड़ दिया और आगे से उनके पास कभी भी नहीं जाऊँगा. इस पर मैंने उन्हें कलाम (भजन) सुनाया-

भजनु रागु तिलंगु
असीं मस्तु घुमूं था चरिया चरिया,
दीन दुनिया खां खरिया खरिया।।टेक।।
मजहब जी असां टोड़े फासी,
अमरापुर जा थियासीं वासी।
भक्तीअ में आहियूं भरिया भरिया।।1।।
मुलनि काज़ियुनि खे खबर न काई,
अचियो कनि था रोजु लड़ाई।
कलमे खां आहियूं फिरिया फिरिया।।2।।
मस्जिद ठाहीसूं हीअ देही,
तंहिं में सिजदो करियूं था वेही।
अन्तर्मुख आहियूं हिरिया हिरिया।।3।।
रमजान रंगु लगो साधनि जो,
पीतुम प्यालो दर्द वन्दनि जो।
भागु मुंहिंजा आहिनि वरिया-वरिया।।4।।

संसार में हम अलमस्तों की तरह घूम रहे हैं. मजहब की फांसी तोड़कर अपनी भक्ति में ही लीन रहते हैं. इन मुल्लों, काज़ियों को इस प्रेम व्यथा की सुध नहीं है. इसलिये रात-दिन लड़ाई करते रहते हैं. शरीर को मस्जिद बनाकर रात-दिन भजन कर रहे हैं इसलिये बाहर के कलमे को पढ़ना छोड़कर इस समय ऐसा प्रेम का प्याला पिया है जिसके पीने से महान् आनन्द की प्राप्ति हुई है.

उपर्युक्त भजन सुनाकर ज्यों ही मैंने चुप की त्यों ही वे लोग डंडे उठाकर मुझे मारने लगे. मैंने यह ताड़ना बिल्कुल शान्ति पूर्वक सहन की. घर वालों ने मार पीट कर मुझे कोठरी में बन्द कर दिया, कोठरी में एकान्त देखकर मुझे प्रसन्नता हुई और भगवान से कहने लगा- प्रभो! इस दास पर आपने अनुपम कृपा की है जो कि भजन के लिये एकांतवास दिया है. समय पर भोजन देकर कोठरी बंद कर जाते थे. लगातार तीन दिन बन्द करने के पश्चात् मुझसे कहने लगे- अब भी कसम उठाओ तो तुम्हें कमरे से बाहर निकाल दें. मैंने उन लोगों से कहा- अल्लाह आपका भला करे मुझे तो और भी एक महीना बन्द कर दो तो मैं एकान्त में धणी की इबादत करूँ. इतना सुनकर वे क्रोधित हो गये और कोठरी से निकाल कर खूब मारने पीटने लगे. इतने में मेरी माँ दौड़ती आयी और उन लोगों को मारने से रोककर कहने लगी, आप इसे मत पीटो. मैं अपने आप इसे समझाकर संतों के यहाँ जाने से रोक दूँगी. अब मैं रोज गाय भैंस चराने के लिये जंगल में जाता हूँ, वहाँ पर एकांत स्थान पर बैठकर भजन करता हूँ.

-सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत से

सांई टेऊँराम बाबा ने बताये- भक्ति के पाँच साधन

अंत तक भक्ति को निभाने के लिए निम्नलिखित पाँच साधन सद्गुरु महाराज जी ने प्रेमी खीयाराम के निवेदन पर भक्तों को बताये-

1. गुरुभक्ति : अर्थात् गुरु में परमात्मा की भावना रखकर उनके श्रीचरणों में श्रद्धा व विश्वास रखकर प्रार्थना करना.

2. सादगी : अर्थात् सात्त्विक अल्पाहार करना, सादे कपड़े पहनना और सदा मननादि करना. इसके अतिरिक्त भूख, प्यास, सर्दी-गर्मी, दुःख-सुखादि द्वन्द्वों को शान्ति से सहन करना.

3. त्याग : अर्थात् सांसारिक इच्छाओं का परित्याग करके भगवान की त्रिगुणात्मक माया से डरते हुए मन में सदैव वैराग्य रखना.

4. सत्संग : भेदभाव रहित तत्त्व वेत्ता महात्माओं का सदैव संग करना.

5. अभ्यास : एकान्त स्थान पर बैठकर गुरुदेव के बताये मन्त्र का जाप करना.

-सद्गुरु टेऊँराम जीवन चरितामृत से

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

'मिले पद निर्वाण' न हिलना, न डुलना, न बोलना-अर्थ बहुत होते हैं। पर निर्वाण पद का प्रधान अर्थ होता है- शान्त हो जाना।

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जयंती 01 मई विशेष

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज

जन्म- वैशाख माह, सिन्धी तारीख- 13, 30 मार्च 1930

माता-मोतिलबाई, पिता- श्री हीरानन्द

जन्म ग्राम-घुंडण, प्रान्त-सिन्ध, देश-अखण्ड भारत

मामा एवं गुरुदेव-सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

24 वर्ष की आयु में- अजमेर आदर्श नगर मेले पर सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की शरण ओट ली।

वर्ष 1963- से सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की सेवा में रहे, अंत तक तन मन समर्पित कर दिया।

वर्ष 1974- में श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ की छपाई व अन्य ग्रंथों पुस्तकों के प्रकाशन में पूरा पूरा समय दिया।

वर्ष 1977- में सद्गुरु महाराज जी के अमरापुर पधारने के पश्चात् काफी समय तक अमरापुर में रहकर सत्साहित्य सेवा की। सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज के जीवन चरितामृत का हिन्दी में बहुत सुन्दर रूप से अनुवाद के साथ सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के जीवन चरितामृत एवं अमरापुर दर्शन पुस्तक का सुंदर संकलन सम्पादन प्रकाशन व प्रेम प्रकाश मण्डल के समस्त साहित्य को हिन्दी, सिन्धी, गुरुमुखी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित कराया।

वर्ष 1992- में आपने प्रेम प्रकाश मण्डल का कार्य भार

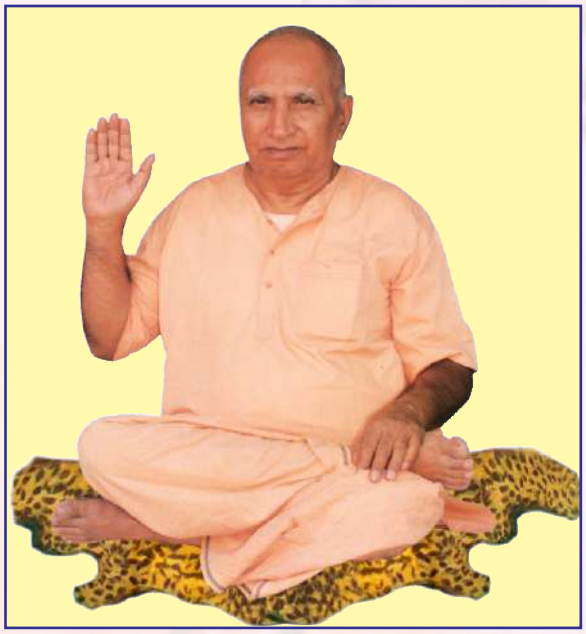

सम्हाला। कई शहरों में नये आश्रमों की स्थापना की। देश विदेश में गुरु नाम का प्रचार-प्रसार किया।

वर्ष 2000- २६ अगस्त को लाँज़रोते में प्रातः गुरु चरण में पूर्ण समर्पित हुए।

2 सितम्बर 2000- हरिद्वार में जलसमाधि।

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम-सन्देश

- **'हमारी प्रार्थना का 'सार-तत्त्व' क्या होना चाहिए? मुक्ति! 'मुक्ति का सही अर्थ है आवागमन के बन्धन से मुक्त होना.'**
- **'आवागमन के बन्धन से मुक्त होना एक पहेली (गुत्थी) है. पर वह खुलेगी कैसे? जब स्वयं को अन्दर ले जाया जाए. अन्दर जाने का अर्थ होता है-शरीर से सम्बन्ध नहीं होना.'**
- **'प्रतीति व प्राप्ति में' भेद होता है. जो दिखता है पर मिलता नहीं उसे प्रतीति कहते हैं और जो मिलता है पर दिखता नहीं उसे प्राप्ति कहते हैं.**
- **'देखने, सुनने आदि में आने वाला प्रतिक्षण परिवर्तनशील संसार (प्रतीति) केवल दिखाई पड़ रहा है और सर्वत्र,नित्य, परिपूर्ण परमात्म तत्त्व प्राप्त है. हर जीव उसी प्राप्त तत्त्व का ही अंश है. मात्र स्वयं पर दृष्टि जाते ही उसका अनुभव होने लग जाता है.'**

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जहाँ तक हो सके तीनों अवस्थाओं बाल, जवानी, वृद्धावस्था में भक्ति करनी चाहिए। भक्ति के द्वारा ही मनुष्य परम पद अविनाशी देश को पा सकता है।

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में 105वां चैत्र मेला सआनन्द सम्पन्न

अमरापुर में लगा भक्ति-सेवा और श्रद्धा का महाकुम्भ

श्री प्रेम प्रकाश पंथ के प्रवर्त्तक आचार्य अनन्तश्री विभूषित मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा लोक कल्याणार्थ १०४ वर्ष पूर्व स्थापित 'चैत्र मेला'- जिसका १०५वाँ, मेला महोत्सव बड़ी ही धामधूम से प्रेमप्रकाशियों के हृदय स्थल, गुरुधाम, श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में बुधवार ०१ अप्रेल से रविवार ०५ अप्रेल २०२६ तक मनाया गया. इस शुभ अवसर पर देश दुनिया से हजारों प्रेमियों ने सेवा-सुमरण-सत्संग की त्रिवेणी में मौज करते हुए महाआनन्द रूपी सागर का मंथन किया और इस महामंथन से प्राप्त सत्मार्ग रूपी वचनामृत का रसपान करके अपने जीवन को सफल किया.

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के संत शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, पूज्य स्वामी मनोहरप्रकाशजी महाराज, संत अनन्तप्रकाशजी (पूना), संत हरिओमलालजी, संत मोनूरामजी (जयपुर), संत सहजानन्दजी (जयपुर), संत शम्भूलालजी (ब्यावर), संत श्यामलालजी (कोटा), संत नरेशलालजी (न्यूयार्क), संत परसरामजी (जलगाँव), संत जीतूरामजी (चैन्नई), संत लक्ष्मणलालजी (अमदाबाद), संत प्रतापलालजी (मुरैना), संत शंकरलालजी (मुम्बई), संत भोलारामजी (कानपुर), संत छोटूरामजी (डबरा), संत हरीशलालजी (जयपुर), संत सुमितलालजी (हरिद्वार-पलवल), संत कमललालजी (गांधीधाम), संत हिमांशुलालजी (हरिद्वार), संत ढालूराम जी, संत कमललालजी, संत गुरदासजी (जयपुर), संत महेशलालजी (सीकर), संत हरिरामजी (खैरथल), संत लोकेशजी (धमतरी), संत महेन्द्रलालजी (फैजाबाद), संत उमेशलालजी इत्यादि संतों द्वारा जिज्ञासुओं को अमृतरस पान कराया गया. इस महाआनन्दमयी सागर का मंथन करके आत्मिक रसामृत को हजारों हजार प्रेमियों ने पीकर अपने जीवन को धनभागी बनाया. आइये लेखनी के माध्यम से देखें कि इस आनन्दसागर को किस प्रकार से संतों प्रेमियों ने मथा और अमृत का रसास्वादन किया-

परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपनी अमृतमयी वाणी में बताया कि आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अमोलक वाणी **'श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ'** साहिब सब सुखों का आधार है, सब ग्रंथों का सार है। इस ग्रंथ साहिब की वाणी के पठन एवं श्रवण मात्र से मन शीतल हो जाता है साथ ही जीवन की सभी समस्याओं का हल हमें इसके अंदर मिल जाता है।

चैत्र मैले की विशेष स्मृतियां :

@ भव्य से भव्यतम सौम्य सुंदर शृँगार. मंच व श्रीमंदिर को मोगरे के फूलों से नित्य नवीन रूप से शृँगारित किया जाता रहा- इन फूलों की सुगंध से मंदिर परिसर व सत्संग सभालय महक उठता था.

@ **रात्रिकालीन विद्युतीय सजावट**- अनिर्वचनीय! सचमुच में कलाकारों ने अथक परिश्रम करके सात मंजिलीय यात्री-निवास इमारत के अलावा श्री अमरापुर दरबार के पूरे परिसर को इस प्रकार से सजाया था कि दूर से ही विद्युतीय कलाओं के दर्शन कर प्रेमीजन बाग बहार हो जाते थे.

@ **सत्संग की चाह**-- अनेक प्रेमी ऐसे भी देखे गये जो प्रारम्भ से अंत तक सत्संग सभा में बैठे सभी संतों विद्वानों का सत्संग मनोयोग से श्रवण कर रहे थे. प्रातः ७ से दोपहर १२ बजे तक एवं दोपहर ३ बजे से रात्रि ६ बजे तक सत्संग गंगा में डुबकी लगाने को आतुर हजारों हजार प्रेमियों का सैलाब. सत्संग सभा के अंतिम एक घंटे में तो जो जहाँ पर होता- वहीं पर बैठकर खड़े होकर सत्संग गंगा का रसपान करता; क्योंकि सत्संग सभालय तो काफी समय पूर्व ही खचाखच हो चुका होता. अंतिम घंटे में स्थिति यह होती कि अमरापुर दरबार का परिसर, समस्त गैलरियाँ, बेसमेंट प्रेमियों से फुल हो जाते थे अन्ततः संतों के दिशा निर्देशन में भीड़ नियंत्रण कमेटी शेष प्रेमियों को बाहर सड़क पर ही फर्श बिछाकर बिठाती- इसके लिए व्यस्ततम सड़क के एक ओर का यातायात स्थानीय

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश मनुष्य जो कार्य प्रारम्भ करे उसे अवश्य पूर्ण करे।

प्रशासन के सहयोग से मोड़ दिया जाता था. प्रेमियों को संत गुरु दर्शन के साथ सत्संग श्रवण बिना किसी बाधा के होता रहे इसके लिए दर्जनों स्थानों पर बड़ी-बड़ी स्क्रीन्स् लगाई गई थीं. ध्वनि विस्तारक यंत्रों द्वारा हर ओर निर्विघ्न रूप से सत्संग श्रवण किया जा रहा था. आश्चर्य तो इस बात का होता था कि सभी प्रेमी जो अंतिम घंटे में लगभग १५ हजार के आसपास होते थे, बड़े ही शान्तभाव से इस महाआनन्द सागर से सत्संग ज्ञानामृत का रसपान बड़े ही मनोयोग से करते दिखाई पड़ते थे.

@ **सेवा की मिसाल** तो प्रेमियों को रेल्वे स्टेशन, एयरपोर्ट पर उतरते ही देखने को मिल रही थी. संतजनों के संचालन में अनेक प्रेमीगण जिन यात्रियों के आने की विधिवत् सूचना थी, उनको रिसीव करके गाड़ियों द्वारा अमरापुर दरबार अथवा उनके लिए निर्धारित आवासीय स्थल पर पहुँचाया जा रहा था. अमरापुर दरबार पर प्रवेश के पूर्व ही बाहर अमरापुर चौराहे पर सेवकजन चमकती वेशभूषा पहने सतर्क खड़े दिखाई पड़ रहे थे जो इस व्यस्ततम चौक पर सामने की ओर से आ रहे प्रेमियों को अथवा सामने की ओर जा रहे प्रेमियों को एकत्रित होने पर थोड़ी-थोड़ी देर में यातायात को क्षण भर के लिए रोककर उनको सड़क पार करवा रहे थे- अप्रतिम!!! आगे बढ़ने पर सुरक्षा एवं भीड़ नियंत्रण कमेटी के हर क्षण सतर्क समर्पित सेवकगण- जो किसी भी अवांछित गतिविधि को रोकने में सजग थे- यहाँ पर भी विस्मित होने की बात है कि ये कोई प्रोफेशनल्स् सेवक नहीं थे, हमारे गुरु महाराज जी के ही अनन्य सेवक हैं. और इनकी सजगता का तो क्या कहना!

जो लोग अकस्मात् तैयार होकर चैत्र मेले में पहुँचे थे और अपने शहरों से पास बनवाकर नहीं आये थे अथवा जिन शहरों में सेवा मण्डली आश्रम नहीं है, उन शहरों कस्बों के प्रेमियों को संतों के अनुमोदन से यात्री-पास बनाकर दी जा रही थी. उधर संतजन बाहर से आने वाले प्रेमियों को शीघ्रातिशीघ्र उनके लिए निर्धारित निवास स्थल पर भेज रहे थे. यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि पूर्व में प्राप्त सूचनाओं के आधार पर निवास कुटियाओं के लिए प्रेमियों को प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ रही थी. पूज्य गुरुदेव भगवान की आज्ञा भी थी कि बाहर से आने वाले प्रेमियों को ५ से १५ मिनट के अंदर उनको कुटिया में पहुँचाया जाए- इसका अनुपालन सेवा प्रभारी संतजन व प्रेमी पूर्णरूप से करते दिखाई पड़ रहे थे.

आगे जाने पर अनेक सेवाधारी अपनी अपनी सेवाओं में जुटे दिखाई पड़े. कोई हाथ से खींचने वाली गाड़ियों पर खाद्य पदार्थ बर्तन इत्यादि रखकर निर्धारित स्थान पर पहुँचाने में लगे हुए थे तो अनेक प्रेमी सेवक 'देने वाला साईं टेऊँराम- लेने वाला बाबा टेऊँराम' कहावत को चरितार्थ करते हुए मुख्य द्वार की ओर से दौड़ते हुए कंधों पर विविध खाद्य सामग्री रखे कोठार की ओर जाते दिखाई पड़ रहे थे. चाय की सेवा भी पूरे अमरापुर परिसर के प्रत्येक क्षेत्र एवं हर एक मंजिल पर कार्यरत रही. जरूरतमंदों के लिए दूध भी सहजता से उपलब्ध था.

रोटी पकाने की दो ऑटोमेटिक मशीनों के अलावा तवे पर फुलके पकाने की सेवा भी दो स्थानों पर निरंतर चल रही थी. भोजन भण्डारा बनाने की सेवा आवासीय इमारत के पीछे विशाल क्षेत्र में चल रही थी- यहाँ पर सैकड़ों की संख्या में महिलाएँ सब्जी काटने की सेवा दिल से कर रही थीं तो मशीन द्वारा भी कुछ तरकारी को चाहा गया आकार दिया जा रहा था. एक सैकड़ा से अधिक राँधाऊ जुटे हुए थे संतों की आज्ञा से भोजन भण्डारे के लिए विविध व्यंजन तैयार करने में. तो मीठे पदार्थ के लिए थोड़ी दूरी पर शेड बनाया गया था जहाँ पर मिष्ठान्न के विविध आयटम तैयार हो रहे थे संतों के निर्देशन में. उसी के सामने वाले क्षेत्र में दूध से बनी कुल्फी बनाई जा रही थी जो कि रात को बाहर से आये समस्त यात्रियों को उनके निवास स्थलों पर चाहे वो अमरापुर में हो या बाहर किसी धर्मशाला होटल में- पहुँचायी जाती थी. भोजनालय के बाहर पोलोविक्ट्री वाले क्षेत्र में पानी की आपूर्ति के लिए निरंतर टैंकर आ रहे थे जिनको अमरापुर दरबार की टंकियों में भरने/स्टोर करने के लिए भी सेवकों की पूरी टीम प्राणपण से जुटी देखी जा रही थी. विश्रामगृह के द्वार से अंदर आने पर आगे चलकर पखर प्रसाद वितरण की व्यवस्था का समय दर्शाते हुए बोर्ड लगा देखा- उसीके समीप बाहर से आने वाले प्रेमियों के प्रसाद पखर की थी।

@ जो भी सामग्री आती और उसे उपयोग में लगाने के लिए ले जाया जा रहा था उसका हिसाब कोठार में कोठार प्रभारी द्वारा रखा जा रहा था. देश दुनिया से आने वाले प्रेमी मेहमानों के लिए 'प्रेमप्रकाशी बैंक' जो अमानती कक्ष

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

हम सांसारिक सम्बन्धियों व मित्रों के लिए व्यर्थ आँसू बहाते हैं।
प्रभु के विरह में गंगा जमुना बहानी चाहिए।

में संचालित थी- यहाँ पर पैसे पासपोर्ट टिकिट आदि रखने-निकालने की सेवा चौबीसों घंटे सुचारू रूप से चल रही थी. इसके अतिरिक्त बाहर मुख्य द्वार के दायीं ओर भी अमानती कक्ष बनाया गया था जहाँ पर वे प्रेमी जो सबेरे आये और दर्शन सत्संग के बाद शाम रात्रि को प्रस्थान कर जाते हैं- के सामान रखने की सुविधा के लिए सेवकजन सक्रिय थे.

भण्डारा खिलाने के लिए पाँच स्थानों पर मुख्य रूप से प्रसादालय बनाया गया था. मुख्य भण्डारघर, सत्संग सभालय के पश्चात् वहाँ पर भी महिला पुरुषों को अलग अलग कतारों में बिठाकर खिलाया जा रहा था तो विशालतम बेसमेंट एवं यात्री निवास की पहली मंजिल पर भी भोजन भण्डारा खिलाने की सेवा चल रही थी. लिफ्ट तीसरी मंजिल से सातवीं मंजिल तक के यात्रियों एवं अशक्त यात्रियों को ले जा रही थी. पहली दूसरी मंजिल में रहने वाले यात्रियों को सीढ़ियों से आने-जाने की सलाह दी गई थी.

@ सेवा व्यवस्थाओं पर पैनी नज़र रखते हुए पूज्य गुरु महाराज जी भी निरंतर हर एक स्थान पर जाकर अवलोकन कर रहे थे और आवश्यकतानुसार दिशा निर्देश भी सेवा प्रभारियों को दे रहे थे.

ख़ास बातों पर भी एक नज़र-

> परम्परानुसार चैत्र मेले की पूर्व संध्या पर समस्त प्रेम प्रकाश सेवा मण्डलियों की बैठक ३१ मार्च रात्रि को ८ बजे पूज्य गुरुदेव भगवान की पावन अध्यक्षता एवं संतों की पवित्र उपस्थित में सम्पन्न हुई. इसमें सेवा कार्यों की जिम्मेवारियाँ समर्पित संतों सेवकों को सौंपी गईं.

> चैत्र मेला प्रारम्भ होने के एक दिवस पूर्व सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज व सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की संत मण्डली के प्रमुख संत अवधूत पूज्य स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज का ६७वाँ पुण्यतिथि (वर्सी) उत्सव मनाया गया. वर्सी उत्सव के पाठों के भोग पश्चात् चैत्र मेले के पाठ श्रीमद्भगवत्गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का शुभारम्भ हुआ.

> चैत्र मेले में दिन की शुरूआत भोरकाल में खैरथल मण्डली द्वारा परम्परागत हरिनाम संकीर्तन प्रभातफेरी के साथ होती थी, जो निरंतर पाँचों दिन जारी रही.

> चैत्र मेले में प्रतिदिन द्विसत्रीय सत्संग सभा की शुरूआत प्रातः सात बजे नित्य नियम प्रार्थना गायन से होती व दोपहर बाद ३ बजे से होती जो प्रातः ११ बजे व रात्रि ९ बजे पूज्य सद्गुरु महाराज जी के श्रीमुख से प्रवाहित ज्ञानामृत की रसधारा के साथ समापन होती.

> चैत्र मेले की सत्संग सभा में प्रतिदिन पूज्य गुरुदेव भगवान के अमृतमयी सद्वचनों को हृदयंगम करने का अवसर देश दुनिया व गुरुनगरी जयपुर के हजारों हजार भक्तों को मिला.

> चैत्र मेले के प्रथम दिवस ०१ अप्रेल बुधवार को प्रातः-कालीन सत्संग अमृत के बाद १०:३० बजे से ११:३० बजे तक हवन-यज्ञ श्री अमरापुर यज्ञशाला जो कि पावन वस्तुओं से सजा हुआ था- में हुआ इसके बाद श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजावंदन का पारम्परिक पंथीय कार्यक्रम बड़ी भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ. इन कार्यक्रमों में लगभग १५ हजार से अधिक की संख्या में भक्तों ने भाग लिया. ध्वजा गीत व साईं टेऊँराम मंगलगान पर उल्लासित होकर बैंडबाजों की तेजस्वर धुनों पर हजारों भक्त नाचे-झूमे.

> चैत्र मेले की विशाल शोभायात्रा १ अप्रेल बुधवार को गोधूलि वेला में ४ बजे श्री अमरापुर दरबार से निकली. हाजरांहजूर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डल की पावन सानिध्यता में हजारों हजार प्रेमी गुरुमहिमा के गीत-भजन-धुनियाँ गाते हुए- नाचते-झूमते आध्यात्मिकता की अद्भुत मस्ती में आनन्दित हो रहे थे. लीला पुरुषोत्तम प्रभु परमात्मा के विविध लीलावतारों के साथ आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज गुरुजनों के लीला प्रसंगों को दर्शाती सजीव झाँकियाँ मेले का आकर्षण थीं.

> लगभग पौन-एक किलोमीटर की लम्बाई में फैली चैत्र मेला शोभायात्रा का ८ किलोमीटर परिक्रमा मार्ग पर पूज्य सिंधी सेन्ट्रल पंचायत के साथ सैकड़ों संस्थाओं जिसमें सामाजिक व्यापारिक संस्थानों, संगठनों एवं धार्मिक संस्थाओं द्वारा सद्गुरु महाराज संत मण्डल का पुष्पमालाएँ पहनाकर व गुलाब के फूलों की वर्खा करके स्वागत किया गया. इस अवसर पर सभी स्वागत स्थलों पर विविध खाद्य पदार्थ, पेयजल व शीतल पदार्थों का वितरण भी किया जाता रहा.

> शोभायात्रा लगभग साढ़े तीन घंटे तक गुरुनगरी जयपुर की परिक्रमा करके रात्रि ७:३० बजे अमरापुर दरबार पहुँचकर सत्संग सभा में परिणित हो गई.

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

जहाँ जन्म है, वहाँ मृत्यु। जहाँ उत्पत्ति है, वहाँ विनाश। मृत्यु का पीछा उसी दिन से हमारे साथ शुरू हो जाता है, जब से हमारा जन्म है। मृत्यु भी कई प्रकार की होती है। रोग भी मृत्यु है, गरीबी भी मृत्यु है और अभिमान भी मृत्यु है।

> शोभायात्रा में हाथी, घोड़े, ऊँटों का लवाजमा, सुन्दर बैण्ड, जीया बैण्ड, प्रकाश बैण्ड व शहनाई ढोल वादन द्वारा भक्तिमय गीत भजनों की आध्यात्मिक संगीत स्वर लहरियों पर संगत ने खूब आनन्द लिया.

> मेले के अंतिम दिवस पल्लव के पश्चात् प्रेमियों-श्रद्धालुओं को प्रसाद के साथ-साथ तुलसी के पौधें भी सन्तों द्वारा वितरित किये गये।

> मेले में जयपुर, अजमेर, ब्यावर, मुंबई, दिल्ली, अमदाबाद, चैन्नई, ग्वालियर, मुरेना, इन्दौर, भोपाल, मंदसोर, डबरा, जोधपुर, गांधीधाम, बड़ोदा, सूरत, रतलाम, उदयपुर, कोटा, सीकर के साथ ही भारत के अन्य शहरों तथा भारत के बाहर से दुबई, स्पेन, अमेरिका, जाकरता एवं अन्य देशों से भी श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

> प्रतिदिन २०० सौ से अधिक भंडारी सेवादारियो ने बनाया भोजन महाप्रसाद !!!

> चैत्र मेले में बाबा टेऊँराम का भोजन भण्डारा दिन भर में लगभग पचास हजार से अधिक की संख्या में प्रेमियों को सुस्वादु भोजन भण्डारा ५ स्थानों पर खिलाया जा रहा था. इस कुणके (साईं टेऊँराम भगवान का महाप्रसाद) को ग्रहण करने के लिए जयपुर हो या बाहर से आये प्रेमी इतने लालायित थे कि इसके लिए हो रही परेशानियों को भी बड़े ही प्रेमभाव से सहन कर रहे थे. बस कुणके को पाना है यह श्रद्धा-भाव थे सबके हृदय में.

> प्रतिदिन लगभग एक लाख भक्त प्रेमी दर्शन, सत्संग भोजन प्रसाद का लाभ ले रहे थे !!!

> प्रेम प्रकाश महिला मंडल, श्री अमरापुर नवयुवक मंडल के अतरिक्त जयपुर शहर की अनेक मंडलिया माता लीलावन्ती भवन, सिंधी कॉलोनी राजा पार्क, सांगानेर महिला मंडल, मालवीय नगर आदि भोजन खिलाने की सेवा दे रही थी !!!

> एन, आर, आई विदेशों से आए भक्तो ने बर्तन साफ करने व भोजन खिलाने की भरपूर सेवा की !!!

> सेवा में क्या बड़े, क्या छोटे, क्या बूढ़े, सभी अपनी अपनी सामर्थ्य के अनुसार सेवा करते हुए नजर आए !!!

> बाहर पानी, व प्रसाद की व्यवस्था भी सुचारू रूप से चल रही थी ! कोई भी अतिथि बिना भोजन प्रसाद के न जाए !!!

> प्रेमी, भक्तो की सुविधा के लिए मेडिकल की सेवा में तीन जगह अस्थाई अस्पताल बनाए गए! स्वामी टेऊँराम अस्पताल, एसएमएस, एवं भाटापारा के डाक्टरो द्वारा सेवा प्रदान की गई !! बड़ी ही प्रशंसनीय रही !!!

> इस अवसर पर श्री अमरापुर जनकल्याण चेरिटेबल ट्रस्ट (रजि.) द्वारा संचालित स्वामी टेऊँराम चेरिटेबल पॉली क्लीनिक,स्वामी शांतिप्रकाश आई सेन्टर, एवं श्री अमरापुर डायग्नोस्टिक सेन्टर के समर्पित-सेवाभावी डॉक्टरों एवं निष्काम सेवादारियों का सम्मान एवं उत्साहवर्धन भी पूज्य महाराजश्री द्वारा पखर-प्रसाद देकर किया गया।

> चैत्र मेले की व्यवस्थाएं श्री अमरापुर नवयुवक मंडल, श्री प्रेम प्रकाश सेवा मंडली, श्री प्रेम प्रकाश महिला मंडल, एवम संत महात्माओं ने भरपूर सेवा का परिचय दिया !!!! सभी साधुवाद के पात्र है !!!

> चैत्र मेले में लगभग ७०-८० संत महात्मा, एवम आठ दस भगत मंडलिया पधारी !!! जिन्होंने भजन, सत्संग, संकीर्तन, से प्रेमियों, भक्तो को तृप्त किया !!!!

> चैत्र मेले का संचालन, देखरेख श्री प्रेम प्रकाशमंडल अध्यक्ष परम पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज स्वयं कर रहे थे !!!!!!

> मेले के मालिक **'युगपुरुष सदगुरु स्वामी टेऊँराम'** जी महाराज है !!!

मेले का समापन पल्लव समय- प्रातः चार बजे पल्लव सत्संग शुरू होने के २० मिनट के अंदर सत्संग सभालय खचाखच तो ५ बजे तक तो पूरा परिसर फुल और ५:३० बजे तक बाहर सड़क भी खचाखच! आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेंऊराम जी महाराज के द्वारा स्थापित १०५ वें चैत्र मेले का समापन गुरुदेव हाजरां हजूर सतगुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने पल्लव पाकर किया। सभी प्रेमी, श्रद्धालुओं का सत्संग संकीर्तन से मन आनंदित हो उठा और हृदय से यही भाव निकल रहा था कि ऐसा प्यारा दरबार और संत महात्माओं का संग नसीब से ही मिलता है। पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी में कहा कि सिंध प्रदेश के टन्डे आदम में आचार्य श्री के द्वारा १०५ वर्ष पूर्व प्रेम प्रकाश मंडल की स्थापना की गई और चैत्र का मेला लगाया गया, उस समय आचार्य श्री सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की आयु ३१ वर्ष की थी। तत्पश्चात् प्रेम प्रकाश मंडल का विस्तार होता रहा, सिंध के महान संत मंडल से जुड़ते रहे और यह वृक्ष निरंतर फलता फूलता रहे और सभी प्रेम प्रकाशी सदैव आनंदित रहे ! इसी के साथ प्रार्थना करे पल्लव पायें। आशवन्दी गुर तो दर आई.....।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश अपने स्वास भगवत भजन में व शरीर परोपकार व धर्म में लगा लो। क्योंकि काल के द्धारा वैसे ही एक न एक दिन मारे जाओगे।

मेले जो आ मालिक सतगुरु, सतगुरु जो इहो मेलो आ

105वां चैत्र मेला — चैत्र मेले के मालिक -सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

चैत्र मेले का विभिन्न समाचार पत्रों में विशेष प्रकाशन रहा

अमरापुर स्थान पर चैत्र मेला

चैत्र मेले में दिखा हजारों सेवादारों का सेवाभाव

बेधड़क | जयपुर

अमरापुर स्थान पर चैत्र मेला भक्तिमय वातावरण में सज रहा है। मेले में हजारों सेवादार अपनी निस्वार्थ सेवा से श्रद्धालुओं का मार्गदर्शन कर रहे हैं। प्रवेश से लेकर भोजन, पार्किंग, चाय-पानी और अन्य सुविधाओं तक हर जगह सेवादारों का समर्पण नजर आ रहा है। देश-विदेश से आए श्रद्धालु इस भव्य आयोजन में भाग लेकर आस्था और उत्साह का अनुभव कर रहे हैं।

मंदिर परिसर रंग-बिरंगे दीपों व झांकियों से जगमगा रहा है। पंच दिवसीय मेले का हर क्षण सेवा, भक्ति और एकता का संदेश दे रहा है। यह दृश्य श्रद्धालुओं और दर्शकों के लिए अत्यंत मनोरम और प्रेरणादायक है। अमरापुर स्थान के व्यवस्थापक संत मोनूराम महाराज ने बताया कि चैत्र मेले का आयोजन प्रेम प्रकाश मंडल की ओर से अन्य मंडल के साथ किया जा रहा है। इसकी स्थापना आचार्य स्वामी टेऊंराम जी ने की थी। मंदिर परिसर में जल सेवा, भजन-संगीत और साहित्य प्रसारण भी निरंतर चल रहा है।

अमरापुर स्थान पर चैत्र मेले में व्यवस्थाओं में लगे सेवादार।

श्रद्धा और ईमानदारी के साथ निभा रहे कार्य

चैत्र मेले में पांच दिनों के दौरान करीब 1 लाख श्रद्धालु दर्शन करेंगे। खास बात यह है कि भोजन प्रसादी बनाने के लिए सब्जी काटने, आटा गूंथने, फुलके पकाने, बर्तन धोने, साफ सफाई के लिए ग्वालियर, ब्यावर, स्पेन, जकार्ता, इंडोनेशिया और दुबई से भी आए श्रद्धालु कार्य को श्रद्धा व ईमानदारी के साथ निभा रहे हैं। 3 हजार से अधिक एनआरआई ने मेले में शिरकत की। उनके रहने के लिए अमरापुर स्थान स्थित प्रेम प्रकाश गेस्ट हाउस समेत कई अन्य जगहों पर व्यवस्था की गई है। गेस्ट हाउस फुल हो चुका है और इसकी बुकिंग 27 मार्च से 7 अप्रैल तक बंद है। मेले का समापन 5 अप्रैल की सुबह प्रार्थना, भजन और सत्संग के साथ होगा। इसके बाद विश्व शांति की कामना करते हुए उत्सव का समापन पल्लव प्रार्थना के साथ किया जाएगा।

श्री अमरापुर स्थान का चैत्र मेला उमड़ रहा है भक्तों का जन सैलाब

ढाई हजार से अधिक देश विदेश के भक्त मिलकर दे रहे निष्काम सेवाएं

● दिव्य जनजागृति समाचार

जयपुर। श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के संस्थापक आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा सौ वर्ष पूर्व स्थापित किया। आध्यात्मिक चैत्र मेला जिसे प्रेम प्रकाश मण्डल का महाकुंभ कहा जाता है। 105 वे आस्था के महाकुंभ में लाखों भक्त श्रृद्धालु माथा टेक रहे है। पंच दिवसीय चैत्र मेले के मालिक सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज वो ही इस मेले की बागडोर संभालते है प्रेम प्रकाश मण्डल के संत महात्मा एवं लगभग 2500 से अधिक सेवादार निमित बनकर सेवा के कार्य संभालते है। देश विदेश से आने वाले प्रेमी भक्तों को लाने ले जाने एवं रहने उनके एंट्री पास बनाने हेतु लगभग 25 सेवादारी सेवा में है, अतिथि सत्कार, चाय पानी अल्पाहार हेतु 150 कैंटीन सेवादारी संभालते है, लाखों की संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं की पार्किंग और जूता, चप्पल सेवा के लिए लगभग 10 स्थानों पे 300 से अधिक सेवाधारी प्रतिदिन दोपहर एवं शाम को भोजन प्रसादी बनाने हेतु सब्जी काटने, आटा गूथने, फुलके पकाने, बर्तन धोने, साफ सफाई हेतु ग्वालियर, ब्यावर, स्पेन, जकार्ता इंडोनेशिया, दुबई एवं अन्य मंडली की 700 से अधिक सेवाधारी और 125 सेवाधारी एवं रसोइए भोजन बनाने में, आचार्य श्री की अमोलक वाणी श्री अमरापुर सतसाहित्य के माध्यम से प्रसारण हेतु सेवा में 35 प्रेमी, निरंतर चलने वाले अन्न प्रसादम जल सेवा में 20, प्रेम प्रकाश महिला मंडल जयपुर, अमरापुर नवयुवक मंडल, प्रेम प्रकाश सेवा समिति के 1000 से अधिक सेवाधारी भोजन खिलाने एवं अन्य सेवाओं में भाग ले जीवन को सफल बना रहे है। मंदिर के बाहर पार्किंग, यातायात व्यवस्था आदि की सुचारू देख रख कर रहे है। श्री अमरापुर स्थान चैत्र मेला के समापन 5 अप्रैल रविवार को सुबह 4 से 7 बजे प्रार्थना, संतो द्वारा सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित वाणी का गायन, भजन सत्संग होगा तत्पश्चात श्री गुरु महाराज जी विश्व शांति पल्लव प्रार्थना के उत्सव का पंच दिवसीय चैत्र मेले का समापन करेंगे।

भास्कर खास — चैत्र मेले में सेवा ही सबसे बड़ा धर्म; विदेशों से आए भक्त भी सेवा में जुटे

73 साल से अखंड भंडारा: चैत्र मेले में NRI भी सेवादार, कोई सब्जी-रोटी बना रहा तो कोई बर्तन धो रहा

भास्कर न्यूज | जयपुर

एमआई रोड स्थित श्री अमरापुर स्थान के चैत्र मेले में इन दिनों सिर्फ आस्था ही नहीं, सेवा का अद्भुत संगम नजर आ रहा है। 105वें चैत्र मेले के तीसरे दिन शुक्रवार को भी श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा, लेकिन यहां सबसे खास बात यह है कि पहचान, पद और पैसा सब पीछे छूट जाते हैं। हर कोई सिर्फ सेवादार बन जाता है। 73 साल से चल रही अखंड भंडारा परंपरा में इस बार देश ही नहीं, विदेशों से आए भक्त भी पूरे समर्पण के साथ सेवा कर रहे हैं। कोई सब्जी काट रहा है, कोई रोटी बना रहा है, तो कोई बर्तन धोने और जल सेवा में लगा है।

सेवा में जुटे NRI भक्त; देश-विदेश की सीमाएं खत्म

• ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में 13 साल से रह रहीं दिव्या वाधवानी अपने परिवार के साथ हर साल मेले में आती हैं। कपड़े के कारोबार से जुड़ा यह परिवार भंडारे में सब्जी काटने की सेवा कर रहा है।

• हांगकांग से आईं [illegible] 1986 से लगातार मेले में आ रही हैं। यहां भी परिवार का कपड़ों का कारोबार है, लेकिन यहां वे हर साल जल सेवा में ही जुटती हैं।

• अहमदाबाद की मनीषा दौलतानी अपने परिवार के साथ हर साल मेले में पहुंचती हैं और इस बार तीन दिन से लगातार रोटी-सब्जी बनाने में तल्लीन हो रही हैं।

• मुंबई से चैत्र मेले में आने वाली सरला [illegible], जो एक गृहिणी हैं, भंडारे में श्रद्धा और सेवा भाव के साथ दाल बनाने के कार्य में पूरी लगन से जुटी हुई हैं।

चैत्र मेला: प्रवासी पुरुष लगा रहे तड़का, महिलाएं सेक रहीं पापड़

[illegible]

दूर देशों और प्रदेशों से चले आए सेवादार

[illegible]

जूता घर में रखे जाते हैं जूते

[illegible]

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश — अपने-अपने धर्म में रहना चाहिये। अपना धर्म ही सुखदाई है।

भक्ति, सेवा और श्रद्धा का महाकुंभ : श्री अमरापुर स्थान में 105वें चैत्र मेले का पल्लव-प्रार्थना के साथ हुआ समापन

उमड़ा भक्ति का सैलाब : देश-विदेश के 4 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने लगाई आस्था की डुबकी

सेवा का अद्भुत उदाहरण दिखा: 2500 से अधिक सेवादारों ने निःस्वार्थ सेवा की

जयपुर (सिंधु गौरव न्यूज़)

राजस्थान को राजधानी और 'छोटी काशी' के नाम से विख्यात गुलाबी नगरी में श्री प्रेम प्रकाश मंडल के संस्थापक सतगुरु स्वामी टेऊंराम जी महाराज द्वारा स्थापित परंपरा का 105वां वार्षिक चैत्र मेला रविवार को भक्ति और शक्ति के अनूठे संगम के साथ संपन्न हुआ। एम.आई. रोड स्थित श्री अमरापुर स्थान में आयोजित इस पाँच दिवसीय महाकुंभ ने सेवा, ज्ञान और भक्ति की एक नई मिसाल कायम की है। इस महोत्सव ने भक्ति, सेवा, स्मरण और ज्ञान की ऐसी त्रिवेणी प्रवाहित की, जिसने जयपुर को पूरी तरह श्रद्धा के रंग में सराबोर कर दिया।

ब्रह्म मुहूर्त में 'पल्लव प्रार्थना' और विश्व शांति का संकल्प

महोत्सव का समापन रविवार को अत्यंत भावुक और दिव्य माहौल में हुआ। उत्सव का आरंभ प्रातः 4:00 बजे संत महात्माओं और गुणीजनों द्वारा आचार्य श्री जी की महिमा के गुणगान के साथ हुआ। तत्पश्चात, ब्रह्म वेला में प्रातः 7:00 बजे पूज्य सतगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने विश्व शांति और मानवता के कल्याण के लिए 'पल्लव प्रार्थना' की। ब्रह्म मुहूर्त की बेला में हजारों श्रद्धालुओं ने पल्लव फैलाकर विश्व शांति और लोक-कल्याण की मंगल कामना की। मंदिर परिसर में जनसैलाब इतना उमड़ा कि संगत मंदिर के बाहर सड़क पर 400 मीटर की दूरी तक बैठकर प्रार्थना में लीन नजर आई। समापन पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए 4000 तुलसी के पौधों का वितरण किया गया।

राजनीतिक और सामाजिक हस्तियों का जमावड़ा

इस आध्यात्मिक उत्सव में समाज के हर वर्ग और सत्ता के गलियारों से प्रमुख हस्तियों ने पहुँचकर आशीर्वाद लिया:

- **विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी:** उन्होंने आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि, 'यह मेला आपसी भाईचारे, सेवा भाव और ईश्वर के प्रति अटूट आस्था का प्रतीक है, जो हमारी सांस्कृतिक धरोहर को सजोए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।'
- **विधायक गोपाल शर्मा (सिविल लाइंस):** उन्होंने आयोजन की भव्यता और व्यवस्थाओं की प्रशंसा की।
- **आरएसएस क्षेत्रीय प्रचारक निम्बाराम जी:** उन्होंने दरबार में मत्था टेका और संतों का आशीर्वाद लिया।
- **ताड़केश्वर महादेव मंदिर के महंत श्री दिनेश महाराज (बम महाराज):** उन्होंने श्री अमरापुर स्थान मंदिर के दर्शन कर संतों का आशीर्वाद लिया।
- **अन्य गणमान्य:** भाजपा नेता रवि नैय्यर, अशोक परनामी सहित कई विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे।

चार लाख श्रद्धालुओं का जनसैलाब और वैश्विक उपस्थिति

इस वर्ष मेले ने पिछले सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए। भक्ति के इस विशाल सागर में 4 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई और सेवा-सिमरन का आनंद लिया। मेले की भव्यता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसमें केवल भारत ही नहीं, बल्कि अमेरिका, स्पेन, जकार्ता (इंडोनेशिया) और दुबई सहित दुनिया के 100 से अधिक शहरों से संगत जयपुर पहुँची। विशेष रूप से विदेशों में रह रही युवा पीढ़ी का अपनी सिंधी संस्कृति के प्रति यह जुड़ाव आकर्षण का केंद्र रहा।

सात समंदर पार से उमड़ी संगत : वैश्विक केंद्र बना जयपुर- सिन्धी संस्कृति और प्रेम प्रकाश मार्ग से जुड़ने के लिए इस वर्ष अमेरिका, स्पेन, जकार्ता (इंडोनेशिया) और दुबई सहित विश्व के विभिन्न देशों और भारत के 100 से अधिक शहरों से संगत जयपुर पहुँची। विशेष रूप से विदेशों में रह रही युवा पीढ़ी का अपनी संस्कृति के प्रति यह झुकाव आकर्षण का केंद्र रहा।

प्रमुख धार्मिक अनुष्ठान और अभिषेक

पंचामृत अभिषेक और नवीन पोशाक धारण: मेले के चतुर्थ दिन (शनिवार) का आरंभ अलौकिक आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ हुआ। प्रातः काल 6:00 बजे पूज्य गुरुदेव सतगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडल के सानिध्य में भगवान लक्ष्मी नारायण, लड्डू गोपाल, आचार्य श्री और गुरुदेव की प्रतिमाओं का पंचामृत से अभिषेक किया गया। मंजीच्चार के बीच भगवान को नवीन मनमोहक पोशाकें धारण कराई गईं, जिसके दर्शन पाकर भक्त निहाल हो उठे।

पवित्र ग्रंथों का भोग परायण: इसी दिन 105वें चैत्र मेले के उपलक्ष्य में रखे गए श्रीमद्भगवद्गीता और श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ साहिब के अखंड पाठों का संतों द्वारा विधि-विधान से भोग परायण किया गया। इस अवसर पर पूरा परिसर गुरुबाणी और भजनों की गूंज से सराबोर रहा।

सेवा का अद्भुत उदाहरण: 2500 से अधिक सेवादार

मेले की सफलता के पीछे 2500 से अधिक सेवादारों का निःस्वार्थ सेवाभाव रहा। इनमें ग्वालियर, ब्यावर और विदेशों से आए 700 सेवादार भी शामिल थे। प्रेम प्रकाश सेवा समिति के 1000 से अधिक सेवादारों ने भोजन व्यवस्था संभाली। लाखों का पैकेज पाने वाले युवा भी यहाँ बर्तन धोने और झाड़ू लगाने जैसे सेवा कार्यों में जुटे नजर आए। हजारों सेवादारों ने जिस निःस्वार्थ सेवाभाव से व्यवस्थाएं संभाली, वह अद्वितीय रहा।

स्वास्थ्य सेवा: एनआईए का निशुल्क चिकित्सा शिविर- धार्मिक आयोजन के साथ-साथ सामाजिक सरोकार निभाते हुए राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान के चिकित्सकों ने निशुल्क शिविर लगाया। डॉ. रितेश रामनानी और डॉ. ईशा हर्षवानी की टीम ने 500 से अधिक लोगों की जाँच की और उन्हें दिनचर्या व ऋतुचर्या के प्रति जागरूक कर निशुल्क दवाइयां वितरित कीं।

पर्यावरण संरक्षण का संदेश : 4000 तुलसी पौधों का वितरण- मेले की एक और विशेष बात रही समाज को प्रकृति से जोड़ना। समापन के अवसर पर संगत के बीच 4000 तुलसी के पौधों का वितरण किया गया, जो आध्यात्मिक शुद्धि के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी देता है।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

प्रतिदिन प्रातः काल को उठकर भगवान के आभार मानें कि उसने आपको आज नया जन्म दिया है। मन में संकल्प करें कि आज कोई भी पाप-कर्म नहीं करूँगा और शुभ कर्म ही करूँगा।

चैत्र मेले के पावन अवसर पर मण्डल के तीन संतो ने ग्रहण किया सन्यास

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में आयोजित 105वें चैत्र मेले के पावन अवसर पर प्रथम दिन हवन-यज्ञ के मध्य में पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज द्वारा प्रेम प्रकाश मण्डल के सन्त श्री मोनूराम जी, सन्त श्री लालूराम जी एवं सन्त श्री लक्ष्मणलाल जी को गेरुआ वस्त्र धारण करवाकर सन्यास ग्रहण कराया गया। मंडल की निष्काम सेवा के लिए पूज्य महाराजश्री द्वारा तीनों संतो को आशीर्वाद देकर सन्यास दिया गया।

चैत्र मेले के पावन अवसर पर पूज्य महाराजश्री द्वारा सन्त श्री टेकचन्द जी, सन्त श्री हिमांशु जी , सन्त श्री भोलाराम जी, सन्त श्री लखीराम जी, सन्त श्री ढालूराम जी, सन्त श्री कमलकुमार जी, सन्त श्री हरीश जी, सन्त छोटूराम जी, सन्त श्री सुमित कुमार जी, सन्त श्री हरि जी को आशीर्वाद प्रदान कर सफेद घघा एवं टोपी धारण कराया गया।

इसी के साथ सन्त कमल जयपुर, सन्त गुड्डू जयपुर, सन्त शंकरलाल मुंबई को सफेद धोती धारण कराकर आशीर्वाद प्रदान किया गया।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

मरता तो शरीर है आत्मा नहीं। वह तो स्वयं ज्ञान स्वरूप है।

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में 105वां शुभ चैत्र मेला सम्पन्न

जयपुर।आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की असीम कृपा एवं आशीर्वाद से १ अप्रेल से ५ अप्रेल २०२६ तक श्री अमरापुर दरबार पर १०५वां चैत्र मेले का आयोजन धामधूम से हुआ।

स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के वचनानुसार मेले का अर्थ है "मिलन"।

जहां संतो के सानिध्य व उनके बताये वचनों से भक्तों के मन का उनके अस्तित्व से मिलन हो सके ताकि उनकी समस्त जिज्ञासाओं का सरल भाषा में समाधान हो।

भा गया मुझे उनका ये अंदाज
बिन बताए जान गए मेरे सब राज
इतनी सुगमता से पूर्ण हुए मेरे सब काज
हर विश्वास पर खरे उतरे मेरे "गुरु महाराज"

प्रथानुसार सर्वप्रथम मेले की शुरुआत हवन-यज्ञ से की गयी। ईश्वर से ये कामना की गयी की मेले का आयोजन व प्रयोजन सुगम व पवित्रता से सम्पन्न हो।

हवन का प्रण, शुद्धतम आधारा हो जाये
मन मेरा शुद्ध हो, शुद्ध ही विचार हो जाये
हवन कुण्ड में समर्पित पूर्णाहुति के ताप से
मैं और मेरों का संहार हो जाये ।

तत्पश्चात् आचार्यश्री के आशीर्वाद और स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज जी के मार्गदर्शन में "प्रेम प्रकाश पंथ" के इतिहास में पहली बार ३ संतो को एक साथ गेरु चोला व १३ संतो को श्वेत चोला पूज्य महाराजश्री के पावन करकमलो द्वारा धारण कराया गया।

श्वेत रंग की शीतलता में शांति का वास होता है
गेरु रंग के तेज में निर्भिकता का अहसास होता है
श्वेत रंग जैसे शीतल मद्धम चांदनी
गेरु रंग में सूर्य की लालिमा का प्रकाश होता है ।

उसके बाद धर्म के प्रतीक प्रेमप्रकाशी ध्वजावन्दन(झण्डारोहण) का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

धर्म ध्वजा का लहराना आस्था की शान होती है
सनातन धर्म भावना की अनूठी पहचान होती है
हवाओं के चलने से जब ध्वजा लहराती है
कर्तव्य और निष्ठा जमीन से आसमान होती है ।

सायंकाल ४ बजे श्री अमरापुर दरबार से भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। जो दरबार से शुरु होकर शहर के प्रमुख मार्गो से होकर श्री अमरापुर दरबार पर आकर सम्पन्न हुयी।

शाम जयपुर शहर खुशबू और रंग से गुलजार हुआ
सांई की प्रेमपूर्ण मुस्कान से, सारा शहर सराबोर हुआ
सुसज्जित झांकियों के पथ संचालन से
सांई जी का दीदार हुआ
हर धर्म के हर जन का, मेरे सांई से प्यार हुआ ।
पुष्प वर्षा, वंदनीय वाणी से
गुरु महाराज का सत्कार हुआ
सत्नाम साक्षी की गूंज से नजारा ये असरदार हुआ
सन्तों के पावन चरणों से शहर मेरा दरबार हुआ ।

इसके बाद लगातार ३ दिनों तक दरबार में सेवा-सत्संग व सिमरन का मिश्रण देखने को मिला। अंतिम दिन पल्लव व आरती के पश्चात् मेले का समापन हुआ।

अंतिम दिन दरबार का अद्भुत था नजारा
नजरों की सीमा से परे, असंख्य भक्त समूह था सारा
श्रृंगार, आरती, भोग, पल्लव व
पवित्र जल के छंडे से
जगत कल्याण की भावना के
साथ मेला हुआ सम्पूर्ण हमारा ।।

गुड़िया भरत जेठानी, मालवीय नगर जयपुर

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश

अवतारी ऋषि, मुनियों महात्माओं से कोई विरले
विवेकी पुरूष ही लाभ प्राप्त करते हैं।

105वां चैत्र मेला-चित्रमय झलकियां

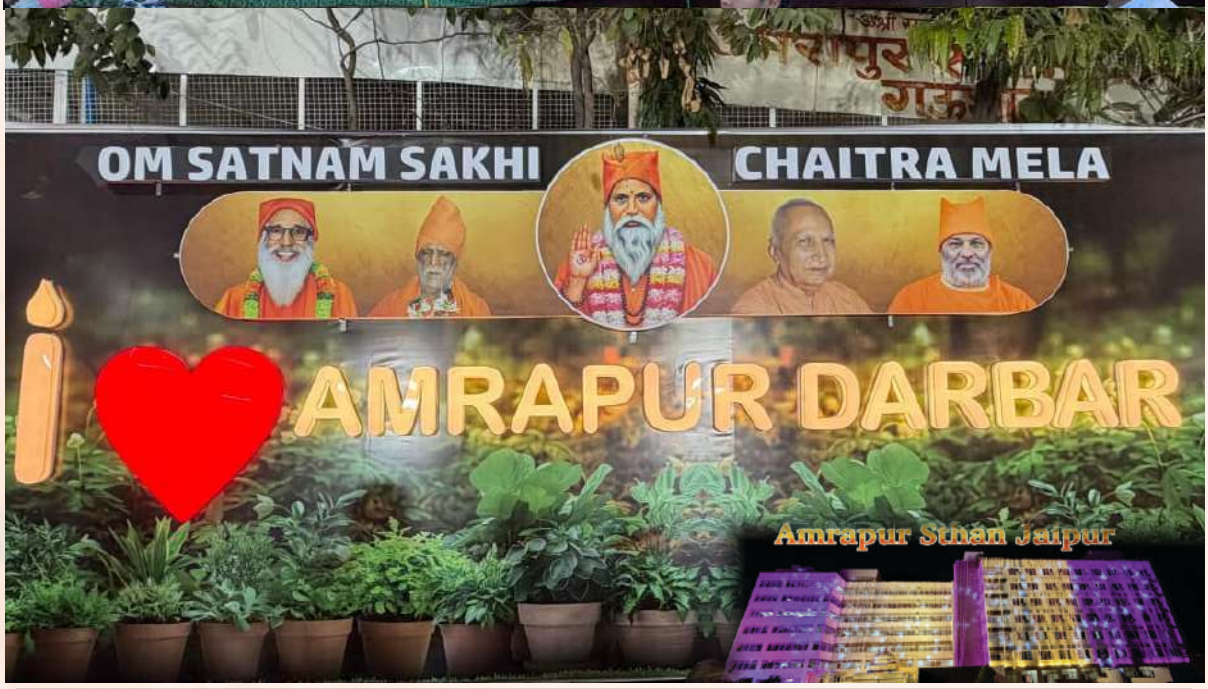

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश अब सारा व्यवहार फैशन का हो गया है। फैशन से देश फना (बर्बाद) हो गया है।

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी मन में किसी वस्तु की चाह रखना ही दरिद्रता है।

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

गलत तरीके से पैसा कमाना या दूसरों को दु:ख देकर पैसा कमाना– ये भी एक तरह की हिंसा है।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश जिन महापुरूषों की वाणी वेद के समान है, उनकी सेवा करनी चाहिए। जब वे महात्मा सेवा करने पर प्रसन्न हो जाते हैं तब जिज्ञासु को आत्मज्ञान देकर अमर बनाते हैं।

105वां चैत्र मेला

विभिन्न राजनैतिक और सामाजिक हस्तियों ने किया अमरापुर दर्शन-लिया पूज्य महाराजश्री का आशीर्वाद

राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष श्री वासुदेव देवनानी पूज्य महाराजश्री से आशीर्वाद प्राप्त करते हुए

सिविल लाइन्स विधायक श्री गोपाल शर्मा जी ने समाधी साहब पर दर्शन कर पूज्य सन्तश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया

चैत्र मेले के पावन अवसर पर ताड़केश्वर महादेव मंदिर के महंत श्री दिनेश महाराज (बम महाराज) ने किए पावन श्री अमरापुर धाम के दर्शन

श्री शक्ति सिंह चौहान (अध्यक्ष एवं महंत श्री खाटूश्याम मंदिर) एवं श्री कुशल सिंह चौहान (श्री श्याम मंदिर, रींगस धाम) ने चैत्र मेले में अमरापुर धाम के दर्शन कर पूज्य महाराजश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश

उदारता का गुण मन पर है, धन पर नहीं,
बड़प्पन का गुण बुद्धि पर है, आयु पर नहीं।

महाकाल की नगरी उज्जैन में हुआ प्रेम प्रकाश आश्रम का भव्य उद्घाटन

भगवान लक्ष्मी नारायण व आचार्यश्री के श्री विग्रहों की हुई प्राण प्रतिष्ठा

उज्जैन। प्रेम प्रकाश मंडल के संस्थापक आचार्य श्री १००८ सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के विशाल वृक्ष की १५० से अधिक शाखाओं में महाकाल भगवान की पावन नगरी उज्जैन में गुरुवार ६ अप्रेल को पूज्य गुरुवर सतगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के पावन सानिध्य में एक सुंदर आश्रम मुकुलित हुआ। बैंक कॉलोनी, सुभाष नगर उज्जैन में नव निर्मित प्रेम प्रकाश आश्रम में भगवान लक्ष्मी नारायण, आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सतगुरु स्वामी सर्वानंद जी महाराज, सतगुरु शान्ति प्रकाश जी महाराज, सद्गुरु हरिदासराम जी महाराज के श्री विग्रहों की विधिवत पूजा अर्चना कर प्राण प्रतिष्ठा, हवन यज्ञ अनुष्ठान के साथ की गयी । आश्रम के उद्घाटन समारोह के पावन अवसर पर विशाल शोभा यात्रा निकाली गई । पूज्य गुरुदेव एवं संत मंडल के श्री मुख से भजन सत्संग भक्ति का रसपान हुआ । उद्घाटन के शुभ अवसर पे ग्वालियर से स्वामी हरिओमलाल जी महाराज, इंदौर से स्वामी लालचन्द जी, जयपुर से पूज्य स्वामी मोहनलाल जी (स्वामी मोनूराम जी), संत लक्कीराम जी , संत ढालूराम जी एवं आस पास के आश्रम के संत एवं प्रेमी सेवादारी सम्मिलित हुए ! उज्जैन आश्रम पर अब प्रतिदिन सुबह शाम, भजन, संकीर्तन, सत्संग, आरती, भोग, आदि नित्य नियम होगा !!

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

माया की नींद से जाग्रत होकर भगवान को याद करें,
जिसने आपको मानव जीवन का स्वर्ण अवसर दिया है।

पुरुषोत्तम मास की महिमा

अधिक मास 17 मई से 15 जून 2026

सनातन हिन्दू शास्त्रों के अनुसार दो वर्ष के बाद प्रति तीसरे वर्ष पुरुषोत्तम-मास अर्थात् अधिक मास का आगमन होता है! यह मास भगवान विष्णु, भगवान श्रीकृष्ण अथवा जगन्नाथ का प्रतीक माना जाता है. इस मास में पूरे एक महीने तक धर्म, दान, ध्यान साधना, प्रार्थनाओं के सत्कार्य सनातन धर्मावलम्बी अपने जीवन सुधार के लिए करते हैं. कभी २८ और कभी २९ दिन का माह होने से प्रति तीसरे वर्ष एक माह की वृद्धि अधिक मास की उत्पति का वैज्ञानिक कारण है. धर्म, दान, ध्यान जैसे सत्कर्म की ओर प्रेरित करने वाला पुरुषोत्तम मास ईश्वर का सानिध्य प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करता है. इस मास में धार्मिक अनुष्ठान, ध्यान के साथ दान करने से मानव जीवन सफल हो जाता है.

इस पूरे माह ध्यान में मगन रहकर प्रभु का स्मरण अपने अपने मतानुसार करने से ईश्वर की निकटता प्राप्त होती है. प्रेमप्रकाश पंथ के अनुयायी प्रेम प्रकाश मण्डल के संस्थापक आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा प्रतिपादित मूलमंत्र 'सतूनाम साक्षी' का प्रतिदिन जप कर इस मास की पुण्यता को प्राप्त करते हैं. निष्ठाभाव से इस मंत्र का उच्चारण करने से परमपिता परमात्मा से निकटता बढ़ती है. कालान्तर में यही निकटता ईश्वर से एकाकार कर देती है. ध्यान लगाकर, एकाग्रचित्त होकर- १०८ बार मंत्रोच्चार से मन में दिव्य ज्योति उत्पन्न होती है, जो भगवान विष्णु के दैदीप्यमान रूप का साक्षात्कार कराती है. त्रिताप (दैहिक, दैविक, भौतिक) से मुक्त करती है. मन प्रफुल्लित हो उठता है. हम आत्म-विभोर होकर भक्ति-भाव से थिरक उठते हैं.

प्रातःकाल स्नानादि कर प्रभु का ध्यान करने पर भगवान जगन्नाथ से साक्षात्कार होने लगता है. जगत का उद्धार करने वाले सत्गुरु देव संत महापुरुष हमें धर्म का मार्ग बताते हैं, जिस पर चलकर न केवल अपना बल्कि सानिध्य में आने वालों के जीवन भी सँवार देता है.

पुरुषोत्तम मास में आध्यात्मिक सुख और बढ़ जाता है, जब धर्मप्रेमी यथाशक्ति दान करता है. धन, अन्न, फल आदि का दान साधक की राह खोल देता है. उसके जीवन में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न नहीं होता है.

गुप्तदान सर्वोत्तम माना गया है. वही दान सार्थक है- जब दाहिना हाथ दान करे तो बायें हाथ को भी पता न चले. वही दान सफल है जो किसी की आवश्यकता पूर्ण कर सके. जरूरतमंद को समय पर सहयोग- दान की सर्वोत्कृष्ट स्थिति है. मंदिर आदि में चढ़ावा भी उपयुक्त कमाई से हो, तो ही फलीभूत होता है. मंदिरों अथवा संतों को दिया गया दान भी विभिन्न माध्यमों से जन समुदाय के सेवा कार्यों में ही लगता है.

जहाँ तक हो सके 'पुरुषोत्तम मास' में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिये, जिससे दाम्पत्य जीवन में समृद्धि होने लगती है. श्रद्धाभाव से मंदिर में भगवान अथवा संतों के आगे दो पुष्प चढ़ाना उसकी महत्ता बढ़ा देते हैं. सूर्य की रश्मि, चन्द्रमा की चाँदनी उनमें समाहित है, वैसी ही स्थिति होती है साधक दम्पति की. एकाकी जीवन व्यतीत करने वाले साधक को अपनी कमाई का कम-से-कम दस प्रतिशन दान करना चाहिये- ऐसा धर्मशास्त्रों का मत है. दूसरों का जीवन भी सुखद हो- दुःखों का नाश हो- प्रभु परमात्मा से ऐसी प्रार्थना कातर स्वर में करना चाहिये. मन में विरक्ति भाव रखकर 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की धारणा अपनानी चाहिये.

प्रतिदिन नियमित प्रार्थना साधक के जीवन को श्रेष्ठ बनाती ही है. पवित्रतम नदियों में स्नान, ध्यान- सुमरण, सेवा-सत्संग, हवन-यज्ञ, दान-पुण्य इस मास के महत्वपूर्ण कृत्य माने जाते हैं. तो क्यों न हम भी इस सत्पथ पर चलकर पुरुषोत्तम मास को सफल बनाएँ.

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली

अहंकार को समाप्त किये बिना शान्ति सम्भव नहीं।

दान दिए धन न घटे

प्रेरक प्रसंग

शास्त्रों की बात, जानें धर्म के साथ सतगुरु कबीर जी ने बड़े ही सरल व स्पष्ट शब्दों में कहा है-

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर।
दान दिए धन न घटे, कह गए दास कबीर।

अभिप्राय- यह है कि जब भगवान ने आपको दिया है तो आप भी दान करें। दानी कभी घाटे में नहीं रहता। दान तो कई गुणा बढ़ता है। रविंद्र नाथ टैगोर ने स्वरचित पुस्तक पुष्पांजलि में एक सत्य कथा का बड़ा सुंदर वर्णन किया है ।

एक बार एक सज्जन नगर के बाजार से ज्वार खरीद कर ला रहे थे। मार्ग के मध्य में उनकी भेंट एक भिखारी से हुई। भिखारी ने हाथ फैला कर कहा, ''बाबू जी! कुछ देते जाओ।'' उस भद्र पुरुष ने उस ज्वार में से एक दाना उठाया और भिखारी के हाथ पर रख दिया। भिखारी ने शुभ कामना व्यक्त करते हुए कहा अच्छा बाबू जी, भगवान आपको खूब दें। अनगिनत होकर मिले।

घर पहुंचते ही उन सज्जन ने ज्वार धर्म पत्नी के हाथों सौंप दी। जब वह उसे पकाने के लिए साफ करने लगी तो ज्वार के दानों में एक सोने का दाना देखकर आश्चर्य चकित रह गई। पत्नी ने तुरंत अपने पति से कहा, ''आप जिस दुकानदार से ज्वार खरीद कर लाए हैं वह तो घाटे में रहा।

उसके साथ धोखा हुआ है उसका एक सोने का दाना गलती से इस ज्वार में आ गया है। कृपया उसे लौटा आइए। पति को मध्य मार्ग में मिले भिखारी की तुरंत याद आ गई। पति ने माथे पर हाथ मार कर कहा धोखा एवं घाटा उस दुकानदार को नहीं हुआ धोखा तो मेरे साथ हुआ है।

पत्नी ने पूछा, ''वह कैसे? पति ने गंभीर स्वर में कहा, मैंने आते समय एक भिखारी के मांगने पर एक ज्वार का दाना दान में दिया था। उसे ही भगवान ने सोने में परिवर्तित कर दिया है। यदि मुठ्ठी भर दे देता तो आज हमारी दरिद्रता दूर हो जाती।

अत- जब दान देने का सुअवसर मिले तो दिल खोलकर उदारता पूर्वक दें। दान देकर सुख की जो अनुभूति होती है उसका वर्णन शब्दों द्वारा नहीं किया जा सकता। उस दिव्य आनंद की अनुभूति उसे ही होती है जो प्रेम एवं उदारता पूर्वक दान करता है।

संकलित

मधुर विनोद

प्रेरक प्रसंग

एक मुसलमान भक्त थे. उनका नाम अहमदशाह था. उन्हें प्रायः भगवान् श्रीकृष्ण के दर्शन होते रहते थे. अहमदशाह से वे विनोद भी किया करते थे. एक दिन अहमदशाह एक बड़ी लम्बी टोपी पहनकर बैठे हुए थे. भगवान् को हँसी सूझी. वे उनके पास प्रकट होकर बोले- 'अहमद! मेरे हाथ अपनी टोपी बेचोगे क्या?' अहमद श्रीकृष्ण की बात सुनकर प्रेम से भर गये. पर उन्हें भी विनोद सूझा. वे बोले- 'चलो हटो, दाम देने के लिये तो कुछ है नहीं और आये हैं टोपी खरीदने!'

भगवान्- 'नहीं जी! मेरे पास बहुत कुछ है!'

अहमद- 'बहुत कुछ क्या है, लोक-परलोक की समस्त सम्पत्ति ही तो तुम्हारे पास है. पर वह लेकर मैं क्या करूँगा?'

भगवान्- 'देखो अहमद! यदि तुम इस प्रकार मेरी उपेक्षा करोगे तो मैं संसार में तुम्हारा मूल्य घटा दूँगा. इसीलिये तो तुम्हें लोग पूछते हैं, तुम्हारा आदर करते हैं कि तुम भक्त हो और मैं भक्त के हृदय में निवास करता हूँ. किंतु अब मैं कह दूँगा कि अहमद मेरी हँसी उड़ाता है, उसका आदर तुम लोग मत करना. फिर संसार का कोई व्यक्ति तुम्हें नहीं पूछेगा.' अब तो अहमद भी बड़े तपाक से बोले- 'अजी! मुझे क्या डर दिखाते हो! तुम यदि मेरा मूल्य घटा दोगे तो तुम्हारा मूल्य भी मैं घटा दूँगा. मैं सबसे कह दूँगा कि भगवान् बहुत सस्ते मिल सकते हैं, वे सर्वत्र रहते हैं, सबके हृदय में निवास करते हैं. जो कोई उन्हें अपने हृदय में झाँककर देखना चाहेगा, उसे वहीं मिल सकते हैं. कहीं जाने की जरूरत नहीं. फिर तुम्हारा आदर भी घट जायगा.'

भगवान् हँसे और बोले- 'अच्छा भैया! न तुम चलाओ मेरी, न मैं चलाऊँ तेरी!'

ये अहमद निरन्तर भगवान् के ध्यान में ही तल्लीन रहा करते थे.

संकलित

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश अपने गुरू में शिष्य की प्रीति, प्रेम, श्रद्धा व विश्वास होना चाहिए।

ज्ञानमूर्ति पूज्य सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का

97वाँ जन्मोत्सव

सोमवार 27 अप्रेल से
शुक्रवार 01 मई 2026 तक

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर सहित
समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों पर श्रद्धा-उमंग
एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा

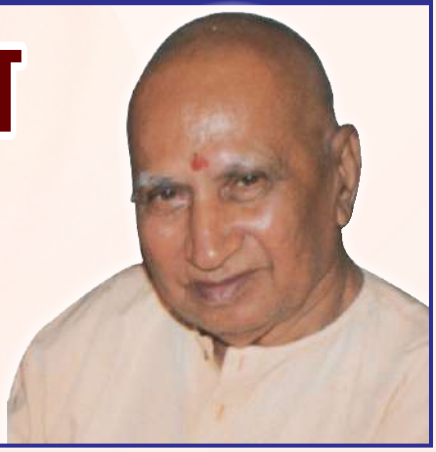

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश पुरूषार्थ ही दैव है इसलिए पुरूषार्थ करो। पुरूषार्थी की जय है।

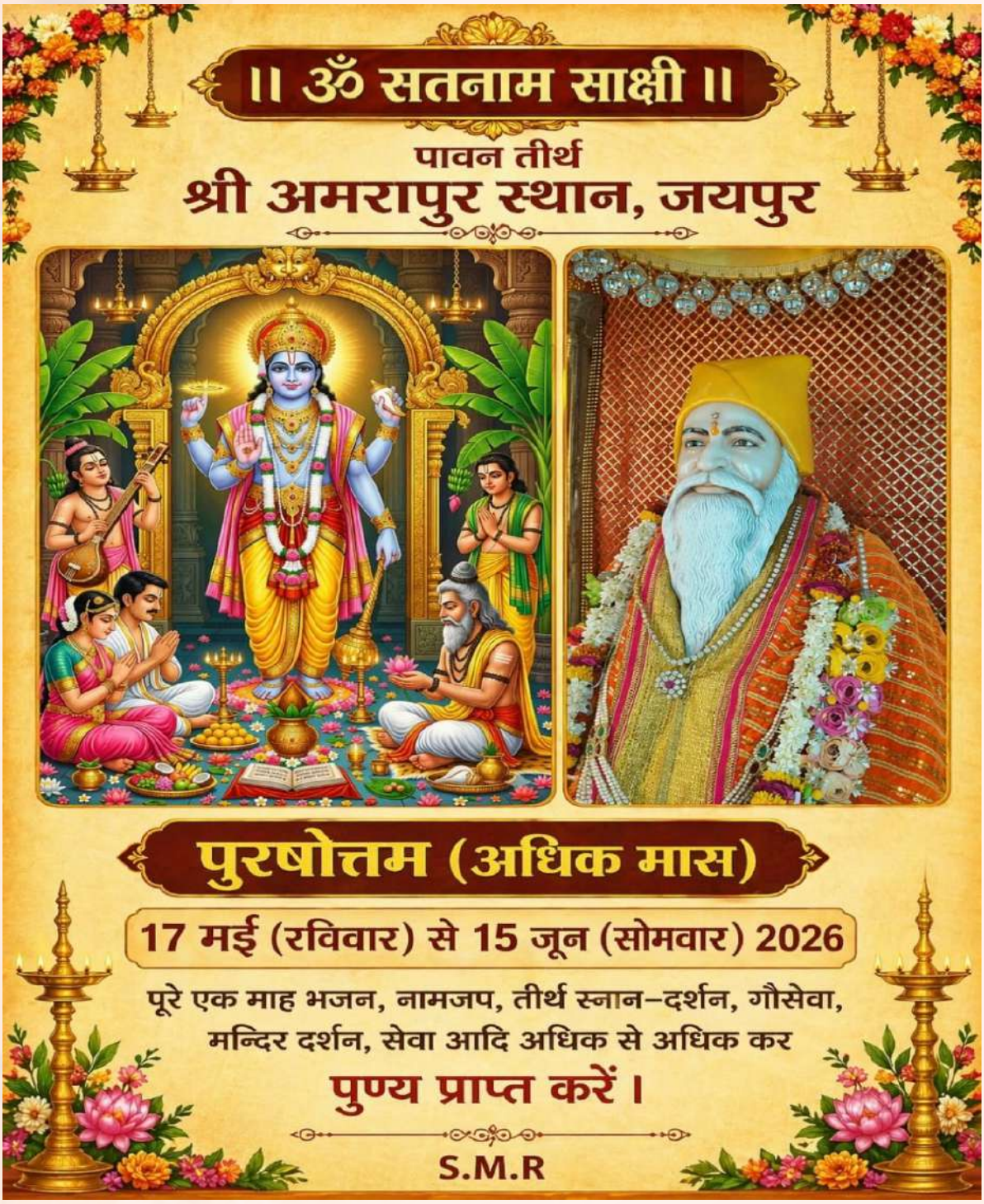

सद्गुरु शान्तिप्रकाश अमृतवाणी

जब आप दूसरों को सुखी करते हैं, तो स्वयं भी सुख का अनुभव करते हैं।
फिर क्यों दूसरों को दु:खी करते हैं।

जिसको गुरु के नाम में रस आ गया....

समझो, जीते जी वो, स्वर्ग ही पा गया, जिसको गुरू के, नाम में, रस आ गया।

1. नाम से ही मिलती, हर-दम भक्ति है, सदा, सत्गुरू के नाम में, बड़ी शक्ति है,
गुरू,नाम का सिमरन, किनारे ला गया, जिसको गुरू के नाम में रस आ गया।

2. इस नाम की जग में, अनोखी बात है, यह नाम ना पूछे कोई जात-पात है,
गुरू नाम वाला, जिन्दगी बना गया, जिसको गुरू के नाम में रस आ गया।

3. गुरू नाम जप से, मन पाऐ आराम है, भाव बनता गुरू नाम से निष्काम है,
गुरू नाम में जो ध्यान को टिका गया, जिसको गुरू के नाम में रस आ गया।

4.इस 'वधवा' पे कृपा गुरू कर दीजिऐ, इसके मन को भी जकड़ अब लीजिऐ,
इसको भी तेरा अमरापुर अब भा गया, इसको गुरू के नाम में रस आ गया॥

प्रेम प्रकाशी दास हरकेश वधवा
समालखा मण्डी, हरियाणा

सतगुरू मेरी पकड़ो बाँह इकबार

एक सन्त अपने शिष्य संग नदी पार से अपनी कुटिया की तरफ लौट रहे थे तो अचानक तेज बारीश शुरू हो गई और नदी में पानी का बहाव बहुत बढ़ गया, और लौटने को सिर्फ एक संकरा सा पुल था मगर उस पर से भी तेज पानी बह रहा था।

हालात देख गुरु ने शिष्य से कहा कि मेरा हाथ पकड़ो ताकि हम सुरक्षित पार हो सकें, मगर गुरू जी के बार-बार कहने पर भी शिष्य ने गुरूवर का हाथ नहीं पकड़ा तो गुरु जी ने शिष्य का हाथ पकड़ा और खींचकर नदी के पार लेकर चल पड़े और बोले कि मैं इतनी देर से बोल रहा हूँ मेरा हाथ पकड़ लो, तो तुमनें हाथ क्यों नहीं पकड़ा ?

इस पर शिष्य बोला गुरूदेव मुझ दुर्बल को खुद पर भरोसा नहीं हो रहा था, यदि मै हाथ पकड़ता, तो में हाथ छोड़ सकता था लेकिन मुझे आप पर पूरा भरोसा था, कि अगर आपने मेरा हाथ पकड़ा तो आप कभी मेरा हाथ नहीं छोड़ोगे, इसलिए मैंने आपका हाथ नहीं पकड़ा था।

भरोसा रखें कि अगर खण्डू वाले ने एक बार हाथ पकड़ लिया तो मंजिल पर ले जाकर ही छोडेंगे।

संकलित

सद्गुरु हरिदासराम वचनावली हमारी प्रार्थना का 'सार-तत्त्व' क्या होना चाहिये ? मुक्ति।

अमरापुर गमन

स्वामी गोविन्दराम मुक्त जी

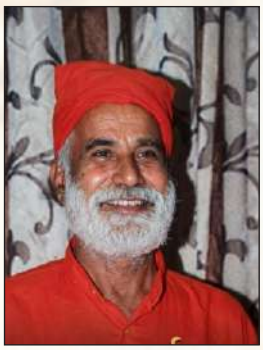

खैरथल। स्वामी गोविन्दराम मुक्त दिनांक २३ अप्रेल २०२६ को ६२ वर्ष की आयु में आचार्य प्रवर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के अभय श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे। आप स्वामी जयमुक्त महाराज जी के समय से खैरथल दरबार की सेवा में सेवारत थे। उसके बाद पूज्य महाराजश्री की आज्ञा से १२ वर्ष तक अहमदनगर आश्रम पर आप सेवारत रहे। उसके बाद लगभग १५ वर्षो तक खैरथल दरबार पर आप सेवारत रहे।

श्री नारायणदास रामचन्दानी जी

जयपुर। उदारचित्त, कर्मठ, हंसमुख सेवाभावी श्री नारायणदास रामचन्दानी अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर दिनांक ०८ अप्रेल २०२६ को आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे। आप जीवन पर्यन्त श्री अमरापुर दरबार पर गुरुचरणों की सेवा-सुश्रुषा में सलंग्न रहे। प्रेम प्रकाश सन्देश के प्रचार-प्रसार में भी आपे निष्काम सेवारत थे।

श्री पेशूराम थरानी जी

रायपुर। रायपुर आश्रम निवासी श्री पेसूराम थरानी जी अपनी जीवन यात्रा पूर्ण कर दिनांक १८ मार्च २०२६ को आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पावन श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे। आप रायपुर दरबार एवं जयपुर दरबार के प्रति अत्यंत समर्पित, सेवाभावी एवं पुराने सेवादार थे। आपने अपने पूरे परिवार सहित सदैव सेवाकार्यों में तत्पर रहकर समाज में एक आदर्श प्रस्तुत किया।

पूजा (महेक) करन बादलानी

गांधीधाम। श्रीमती पूजा(महेक) बादलानी धर्मपत्नि श्री करन बादलानी जी अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण ३६ वर्ष की अल्पायु में दिनांक ०६ मार्च २०२६ को आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारी। आप बादलानी परिवार की पुत्रवधु थी। आपका पूरा बादलानी परिवार गुरुजनों की सेवा में सेवारत है।

दादा भागचन्द मेहताणी

तनरीफ स्पेन। पूज्य गुरुजनों के प्रिय शांत, कर्मठ सेवाभावी दादा भागचन्द मेहताणी निवासी तनरीफ स्पेन ७ मार्च २०२६ को अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे।

श्री सेवाराम तनेजा

ग्वालियर। श्री सेवाराम तनेजा सुपुत्र अमरापुरवासी श्री सच्चलमल तनेजा दिनांक २८ मार्च २०२६ को अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण कर आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के श्रीचरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारे। आपका पूरा तनेजा परिवार गुरुचरणों की सेवा में सेवारत है।

श्री प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सद्गुरु स्वामी श्री भगत प्रकाश जी महाराज एवं संत मंडली द्वारा दिवंगत आत्माओं को अमरापुर लोक में अपनी चरण-शरण में रखने हेतु आचार्य सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज व प्रभु परमात्मा से पल्लव पाकर प्रार्थना की गई।

सद्गुरु टेऊँराम अमृतोपदेश बिना गुरू की भक्ति के आत्म-ज्ञान प्राप्त करना असम्भव है। ईश्वर से भी गुरु का महत्व बड़ा है।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर सत्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

का यात्रा कार्यक्रम मार्च 2026 से अप्रेल 2026 तक

16–18 मार्च 2026	हरिद्वार
19 मार्च 2026	दिल्ली
20 मार्च 2026	यात्रा
21–22 मार्च 2026	जयपुर
23 मार्च 2026	सीकर-बीकानेर
24 मार्च 2026	डूंगरगढ़
25 मार्च से 06 अप्रेल 2026	जयपुर (चैत्र मेला)
7–8 अप्रेल 2026	रतलाम
9–10 अप्रेल 2026	उज्जैन
11–15 अप्रेल 2026	इन्दौर
16–17 अप्रेल 2026	बैरागढ़ (भोपाल)
18–20 अप्रेल 2026	जयपुर

व्रत–पर्व–उत्सव

17 अप्रेल 2026– शुक्रवार– अमावस्या
18 अप्रेल 2026– शनिवार– चन्द्र दर्शन
19 अप्रेल 2026– रविवार– अक्षय तृतीया
22 अप्रेल 2026– बुधवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
27 अप्रेल 2026–सोमवार– एकादशी
27 अप्रेल से 1 मई 2026– स्वामी हरिदासराम जी महाराज का 97वां जन्मोत्सव
01 मई 2026– शुक्रवार– पूर्णिमा, सांई हरिदासराम जयंती
06 मई 2026– बुधवार– गणेश चर्तुर्थी
13 मई 2026–बुधवार– अपरा एकादशी
16 मई 2026– शनिवार– अमावस्या
17 मई 2026–रविवार–अधिक मास (पुरूषोत्तम) प्रारंभ
18 मई 2026– सोमवार– चन्द्र दर्शन
22 मई 2026– शुक्रवार– चौथ (मंगलमूर्ति सत्गुरु स्वामी श्री टेऊँराम जी महाराज का मासिक अवतरण दिवस)
27 मई 2026–बुधवार– कमला एकादशी
31 मई 2026–रविवार– पूर्णिमा

सद्गुरु सर्वानन्द सन्देश आज कल के लोगों को सिनेमा, सिगरेट, पान, सुपारी और चाय के अलावा कहीं भी सुख देखने में नहीं आता है।

डाक पंजीकृत संख्या ग्वालियर/40020293/2020-22
रजि० समाचार पत्र-रजि० नं० MP/Hindi/2008/25627

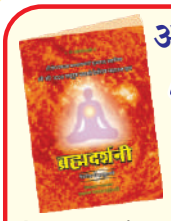

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा रचियलु

'ब्रह्मदर्शनी'

सिंधीअ में समुझाणी

-प्रो. लछमण परसराम हर्दवाणी (पुणे)

पोएं फरवरी-मार्च २०२६ अंक खां अगिते-

।। दशपदी-19 ।।

राम सुमर धर रामहिं ध्याना, राम रटो गह रामहिं ज्ञाना।
राम नाम रस नितहीं पीवो, राम नाम जप जुग जुग जीवो।
राम नाम का ले आधारा, राम नाम पत राखन हारा।
राम नाम भव सागर सेतू, राम नाम सुख संपति हेतू।
राम नाम अघ ओघ निवारे, कह टेऊँ अति अधम उद्धारे।। 2 ।।

"तूं राम (ईश्वर) जो सुमिरनु करि, राम खे पंहिंजे ध्यान में आणि. तूं 'राम' 'राम' जपींदो रहु ऐं राम जे ज्ञान खे प्रापति करि, आत्मज्ञानु हासिल करि. तूं राम जे नाम जो रसु (आनंदु) नितु पीअंदो रहु. राम-नामु जपण सां तूं जुग-जुग जीअंदे. हे मनुष तूं राम-नाम जो आधारु/सहारो वठु. राम जो नामु मनुष जी पति रखण वारो आहे. राम-नामु हीउ भव-सागरु, संसार रूपी सागरु पारि करण लाइ हिक पुलि (सेतू) आहे. सुख-संपत्ती प्रापति करण लाइ राम-नामु जपि. राम जो नामु पापनि ऐं दुखनि जा ढेर दूरि कंदडु आहे." सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराजनि चवनि था,"राम-नाम जो जपु करण सां अनेक पापियुनि जो उद्धारु थियो आहे. अर्थात् राम-नाम पापियुनि जो उद्धारु कयो आहे, अहिड़ा जीव मुक्ती प्रापति करे चुका आहिनि."

राम जो, परमेश्वर जो नालो जपणु, भगवान जो चिंतनु करणु आध्यात्मिक ऐं भौतिक जीवन जो पायो/बुनियादु आहे. रामु-नाम जो जपु ऐं चिंतनु ज़रूरी आहे. छो त जेसीताईं चिंतनु न थियो आहे, तेसींताईं मननु कोन थी सघंदो. जेसीं मननु कोन थियो आहे, तेसीं आचरण में, हलति में परिवर्तनु कोन थी सघंदो. काम जो, कामनाउनि जो सोचु करण खां राम जो सोचु, चिंतनु करणु सुठो आहे, आत्माराम जो चिंतनु करणु कल्याणकारी आहे. राम-नाम जे जप सां अंदर में उजालो थिए थो. उन उजाले में ई अगिते वधणु ज़रूरी आहे. राम-नामु जपण सां अंदर जी, मन जी जलन बि मिटिजी वञे थी. पंहिंजो मनु ऐं बुद्धी राम-नाम में ई लगाइणु घुरिजे, राम- नाम सां ई प्रेमु करणु घुरिजे, राम-नाम जी ई शरण वठणु घुरिजे, छाकाणि त राम-नाम जपण जी साधना जीवन जे जनम-मरण रूपी मुसीबतुनि खे दूरि करण वारी आहे. तंहिंकरे राम-नाम में विश्वासु रखणु घुरिजे. राम-नाम जे जप सां कल्याण ऐं आनंद जो उदय थिए थो ऐं कलिजुग जा पाप तथा छल-वल मिटिजी वञनि था-

राम, राम, राम, राम, राम, राम, जपत।
मंगल-मुद उदित होत, कलि-मल-छल छपत।। (तुलसीदास)

(हलदंडु)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक : संतोष पंजवानी द्वारा मुद्रक : सुनील पंजवानी, सन्नी प्रिन्टर्स, मामा का बाजार, लश्कर, ग्वालियर से मुद्रित करवाकर, 401-झूलेलाल अपार्टमेंट, कृष्णा एन्क्लेव,समाधिया कॉलोनी,तारागंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 से प्रकाशित किया गया।

कार्यालय: प्रेम प्रकाश सन्देश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर-474001
(कार्यालय फोन 0751-4045144 पर सम्पर्क समय प्रातः 8 से 10 बजे तक (तात्कालिक व्यवस्था)

सम्पादक : प्रहलाद सबनानी
प्रबन्ध सम्पादक : शंकरलाल सबनानी

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना को आपके पते के ऊपर **LAST COPY** लिखकर उसे **BOLD** करके दर्शाया गया है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए.

– व्यवस्थापक

किसी कारणवश वितरण न होने पर निम्न पते पर वापस करें-

सम्पादक, प्रेम प्रकाश सन्देश
प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर 474001 (म.प्र.)